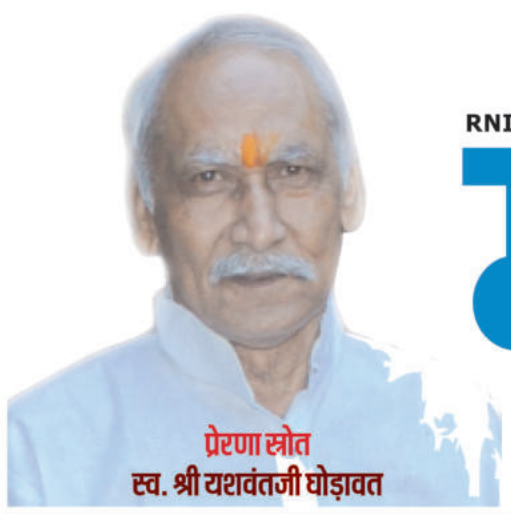

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

यदि असंतोष की भावना को लगन व धैर्य से रचनात्मक शक्ति में न बदला जाए तो वह खतरनाक भी हो सकती है।



इंदिरा गांधी

वर्ष-09, अंक - 05 (साप्ताहिक) खवासा, गुरूवार 26 नवम्बर 2026 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

चुनाव 2027 : भाजपा और अकाली दल के बीच गठबंधन का ऐलान

नई दिल्ली, एजेंसी।

पंजाब की राजनीति में मंगलवार को बड़ा बदलाव देखने को मिला। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और शिरोमणि अकाली दल ने वर्ष 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए गठबंधन का औपचारिक ऐलान किया है। इस घोषणा के बाद राज्य में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। दोनों दलों के एक साथ आने से पंजाब में नए राजनीतिक समीकरण बनने की संभावना है। वहीं, सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के सामने भी नई राजनीतिक चुनौती खड़ी हो सकती है।

दिल्ली में आयोजित प्रेसवार्ता में भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन और शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने संयुक्त रूप से गठबंधन की घोषणा की। दोनों दलों के बीच पिछले कई महीनों से बातचीत चल रही थी। इस अवसर पर पंजाब भाजपा के कई वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे। इनमें प्रदेश इकाई के प्रमुख केवल सिंह ढिल्लों, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुनील जाखड़ और अश्वनी कुमार सहित अन्य नेता शामिल थे।



भाजपा और अकाली दल का गठबंधन पंजाब की राजनीति में लंबे समय तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। हालांकि, सितंबर 2020 में केंद्र सरकार के तीन कृषि कानूनों को लेकर दोनों दलों के रास्ते अलग हो गए थे। किसान आंदोलन के समर्थन में अकाली दल ने तत्कालीन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) से अलग होने का फैसला किया था। करीब छह साल बाद दोनों दल एक बार फिर साथ आए हैं और आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुट गए हैं।

इस गठबंधन को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पहले भी संकेत दे चुके थे। उन्होंने पंजाब में राजग की सरकार बनने का भरोसा जताया था। इसके बाद से ही दोनों दलों के बीच नजदीकियां बढ़ने की चर्चाएं शुरू हो गई थीं। गठबंधन की घोषणा गुरु नानक देव के 556वें प्रकाश पर्व के अवसर पर किए जाने को भी राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। पंजाब की राजनीति में धार्मिक और सामाजिक समीकरणों की अहम भूमिका रही है।

अब इस गठबंधन के बाद सबसे अधिक चर्चा दोनों दलों के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर है। आगामी विधानसभा चुनाव में दोनों पार्टियां किस अनुपात में सीटों पर चुनाव लड़ेंगी और साझा रणनीति क्या होगी, यह आने वाले समय में स्पष्ट होगा। इसके साथ ही पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी और कांग्रेस की चुनावी रणनीति पर भी इस नए राजनीतिक घटनाक्रम का असर देखने को मिल सकता है।

बांग्लादेश पर बयानः अर्जुन सिंह ने हिंदुओं की हत्या पर जताया आक्रोश



कोलकाता, एजेंसी।

बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमलों और हत्याओं को लेकर भारत में नाराजगी बढ़ती जा रही है। इसी बीच पश्चिम बंगाल के मंत्री अर्जुन सिंह ने पड़ोसी देश को लेकर विवादित बयान दिया है। उन्होंने दावा किया कि 16 दिसंबर तक भारत बांग्लादेश पर कब्जा कर लेगा। उनके इस बयान से दोनों देशों के बीच पहले से जारी तनाव को लेकर राजनीतिक चर्चाएं तेज हो गई हैं।

अर्जुन सिंह ने मंगलवार को पश्चिम बंगाल के भाटपारा में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि अब बहुत हो चुका है और बांग्लादेश को लेकर कोई बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने वहां हिंदुओं की हत्याओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इसका बदला जरूर लिया जाएगा। उनके बयान को बांग्लादेश में हिंदू समुदाय की सुरक्षा को लेकर बढ़ते आक्रोश के रूप में देखा जा रहा है।

गौरतलब है कि 16 दिसंबर बांग्लादेश के इतिहास में महत्वपूर्ण दिन है। इस दिन वहां विजय दिवस मनाया जाता है। वर्ष 1971 में इसी दिन पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना और मुक्ति वाहिनी के सामने आत्मसमर्पण किया था। इसके बाद बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र बना था। ऐसे में अर्जुन सिंह द्वारा इसी तारीख का उल्लेख किए जाने से उनका बयान चर्चा में आ गया है।

इस बीच बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री और अवामी लीग प्रमुख शेख हसीना की संभावित वापसी को लेकर भी चर्चाएं तेज हैं। उनके प्रवक्ता सैयद मोजम्मेल अली के अनुसार, हसीना 16 दिसंबर को दिल्ली से ढाका लौटना चाहती हैं। इसके लिए उन्होंने बांग्लादेश सरकार से विमान की व्यवस्था करने का अनुरोध किया है।

हालांकि, बांग्लादेश के विदेश मामलों के राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने कहा है कि हसीना को प्रत्यर्पण प्रक्रिया के तहत ही वापस लाया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि बांग्लादेश लौटने पर उन्हें हिरासत में लिया जाएगा।

युवती से सामूहिक दुष्कर्म का आरोप

नई दिल्ली, एजेंसी।

पूर्वी दिल्ली के प्रीत विहार इलाके में एक कैफे में आयोजित पार्टी के दौरान 22 वर्षीय युवती से कथित सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पुलिस ने इस मामले में दो महिलाओं समेत तीन संदिग्धों को गिरफ्तार किया है, जबकि तीन अन्य आरोपियों की तलाश की जा रही है। पीड़िता और आरोपी एक ही कैफे में काम करते थे।



पुलिस के अनुसार, घटना 23 नवंबर की रात की है। पीड़िता प्रीत विहार स्थित सल्तनत कैफे में अपने सहकर्मियों के साथ पार्टी में शामिल हुई थी। रात करीब 11रू30 बजे कैफे बंद होने के बाद भी सभी लोग अंदर ही रुके रहे। एक कर्मचारी के पास कैफे की चाबी होने के कारण वे वहां मौजूद थे। आरोप है कि इस दौरान शराब पी गई और नाच-गाना चलता रहा। पार्टी 24 नवंबर की सुबह करीब 3:30 बजे तक जारी रही।

पीड़िता ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया है कि पार्टी के दौरान दो पुरुषों ने उसके साथ यौन उत्पीड़न किया, जबकि वहां मौजूद अन्य सहकर्मियों ने भी उनका साथ दिया। पुलिस ने शिकायत के आधार पर चार पुरुषों और दो महिलाओं सहित छह लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया है।

पुलिस के मुताबिक, पीड़िता मंगलवार सुबह करीब 5:45 बजे थाने पहुंची और शिकायत दर्ज कराई। कैफे से निकलने के तुरंत बाद उसने पुलिस को सूचना नहीं दी थी। परिसर में लगे निगरानी कैमरों की फुटेज में वह एक पुरुष मित्र और दो अन्य महिलाओं के साथ कार में जाती दिखाई दी है। पुलिस पीड़िता का विस्तृत बयान दर्ज कर रही है। इसके अलावा मजिस्ट्रेट के सामने भी उसका बयान दर्ज कराया जाएगा। फरार आरोपियों की तलाश में पुलिस संभावित ठिकानों पर छापेमारी कर रही है।

विमान में यात्री से मारपीट, आरोपी गिरफ्तार

कोच्चि।

अबू धाबी से कोच्चि आ रही इंडिगो की उड़ान में सहयात्री के साथ मारपीट करने के आरोप में पुलिस ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान विट्टिला निवासी रोशन मार्टिन के रूप में हुई है। आरोप है कि उसने उड़ान के दौरान त्रिशूर निवासी यूसुफ पर हमला कर दिया और बेल्ट से उनका गला कसने की कोशिश की।



पुलिस के अनुसार, घटना मंगलवार शाम करीब 7 बजे उड़ान संख्या 6ई1404 में हुई। आरोपी ने यूसुफ के चेहरे पर मुक्का मारा, जिससे उनका चश्मा टूट गया और दाईं आंख के पास चोट आई। इसके बाद आरोपी ने बेल्ट से उनका गला दबाने का प्रयास किया। घटना के समय आरोपी विमान की सीट संख्या 30डी पर बैठा था, जबकि यूसुफ 31बी पर सवार थे।

नेडुम्बसेरी पुलिस ने शिकायत के आधार पर रोशन मार्टिन को गिरफ्तार कर लिया है। उसके खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 115(2) और 118(1) के तहत मामला दर्ज किया गया है। ये धाराएं जानबूझकर चोट पहुंचाने और खतरनाक साधनों का इस्तेमाल कर चोट पहुंचाने से संबंधित हैं। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच जारी है। जल्द ही शिकायतकर्ता का विस्तृत बयान दर्ज किया जाएगा। इसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

न्यायपालिका की सबसे बड़ी चुनौती समय पर न्याय देना - मुख्य न्यायाधीश

नई दिल्ली, एजेंसी।

26 नवंबर को देश में संविधान दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने एक साक्षात्कार में न्यायपालिका के सामने मौजूद चुनौतियों और उनके समाधान पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि भारतीय न्यायपालिका की सबसे बड़ी परेशानी न्याय मिलने में देरी है। इस समस्या को दूर करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय लगातार प्रयास कर रहा है।



मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने संविधान दिवस की पूर्व संध्या पर कहा कि बदलते समय के साथ न्यायपालिका की जिम्मेदारियां भी बढ़ी हैं। अपराध के तरीकों में बदलाव आया है और नागरिकों में अपने अधिकारों को लेकर जागरूकता तथा अपेक्षाएं बढ़ी हैं। इसके अलावा कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नई तकनीकों के दौर में न्यायपालिका के सामने कई नई चुनौतियां भी आई हैं।

उन्होंने बताया कि न्यायिक प्रक्रिया को सरल और तेज बनाने के लिए कई तकनीकी सुविधाएं शुरू की गई हैं। अब याचिकाएं ऑनलाइन दाखिल की जा सकती हैं। न्यायालयों के नोटिस ई-मेल, व्हाट्सएप और अन्य माध्यमों से भेजे जा रहे हैं। ऑनलाइन सुनवाई की सुविधा से दूर-दराज के क्षेत्रों के वकीलों को भी अपने स्थान से ही मुकदमों में बहस करने का अवसर मिल रहा है।

मुख्य न्यायाधीश ने बताया कि सर्वोच्च न्यायालय में ई-फाइलिंग की व्यवस्था 2 अक्टूबर 2006 से शुरू की गई थी। इसके माध्यम से याचिकाकर्ता निर्धारित प्रक्रिया के तहत ऑनलाइन याचिका दाखिल कर सकते हैं। इससे कागजी कार्रवाई कम करने और न्यायिक प्रक्रिया को अधिक सुविधाजनक बनाने में मदद मिली है।

उन्होंने कहा कि न्याय मिलने में होने वाली देरी को कम करना न्यायपालिका की प्राथमिकता है। इसके लिए तकनीक का अधिक उपयोग करने के साथ न्यायिक व्यवस्था को लगातार बेहतर बनाने की जरूरत है, ताकि आम नागरिकों को समय पर न्याय मिल सके।

जानबूझकर हटाई थी राजीव गांधी की सुरक्षा - राहुल गांधी

नई दिल्ली, एजेंसी।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने आरोप लगाया है कि उनके पिता और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की सुरक्षा जानबूझकर हटाई गई थी, ताकि उनकी हत्या की जा सके। उनके इस बयान के बाद राजीव गांधी की सुरक्षा हटाए जाने का पुराना राजनीतिक विवाद एक बार फिर चर्चा में आ गया है। राहुल गांधी ने ये बातें अपनी मां सोनिया गांधी और बहन प्रियंका गांधी के साथ एक वीडियो बातचीत के दौरान कहीं। इस दौरान सोनिया गांधी की किताब शिबलॉन्गिंगश् पर चर्चा हो रही थी।



मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा किए गए वीडियो में सोनिया गांधी ने वर्ष 1991 के एक घटनाक्रम को याद किया। उन्होंने बताया कि उस समय राहुल गांधी अपने पिता राजीव गांधी के साथ बिहार दौरे पर गए थे। वहां राजीव गांधी पर पत्थर फेंके गए और भीड़ ने उनके खिलाफ नारेबाजी की थी। सोनिया गांधी ने बताया कि राहुल के घर लौटने पर उन्होंने कहा था कि यदि पापा की सुरक्षा के लिए कुछ नहीं किया गया, तो उन्हें जल्द ही उनके अंतिम संस्कार के लिए वापस आना पड़ सकता है।

राहुल गांधी ने बिहार के उस दौरे को अपने लिए निर्णायक बताते हुए कहा कि उनके पिता की सुरक्षा इसलिए हटाई गई थी, ताकि उनकी हत्या हो सके। उन्होंने आरोप लगाया कि यह कोई सामान्य घटना नहीं थी, बल्कि जानबूझकर ऐसा किया गया था और इसके लिए माहौल तैयार किया गया था। राहुल ने यह भी बताया कि सुरक्षा को लेकर उनकी अपने पिता के साथ बहस हुई थी।

इस बातचीत में प्रियंका गांधी ने भी पुरानी यादें साझा कीं। उन्होंने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सोनिया गांधी राजीव गांधी की सुरक्षा को लेकर काफी चिंतित और सतर्क रहती थीं। प्रियंका के अनुसार, सोनिया गांधी सुरक्षा व्यवस्था की लगातार निगरानी करती थीं और यदि कोई सुरक्षाकर्मी सोता हुआ मिलता था, तो वे उसे लेकर नाराजगी जताती थीं।

गौरतलब है कि राजीव गांधी की सुरक्षा हटाए जाने का मुद्दा लंबे समय से राजनीतिक बहस का विषय रहा है। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद वर्ष 1985 में विशेष सुरक्षा समूह का गठन किया गया था। इसके बाद वर्ष 1988 में संसद ने विशेष सुरक्षा समूह कानून पारित किया। उस समय इस कानून के तहत पूर्व प्रधानमंत्रियों को सुरक्षा देने का प्रावधान नहीं था। वर्ष 1989 में वीपी सिंह के प्रधानमंत्री बनने के बाद राजीव गांधी को दी जा रही विशेष सुरक्षा हटा ली गई थी।

आरएसी टिकट रद्द करने पर रेलवे पर 25 हजार का जुर्माना

नई दिल्ली, एजेंसी।

आरएसी टिकट को आरक्षण चार्ट बनने के बाद बिना पूर्व सूचना प्रतीक्षा सूची में बदलकर रद्द करने के मामले में रेलवे को उपभोक्ता आयोग से झटका लगा है। केरल के मलप्पुरम जिला उपभोक्ता आयोग ने रेलवे को सेवा में कमी और अनुचित व्यापार व्यवहार का दोषी ठहराते हुए यात्री को 25 हजार रुपये मुआवजा देने का आदेश दिया है। रेलवे को 45 दिनों के भीतर भुगतान करना होगा। ऐसा नहीं करने पर 9 प्रतिशत वार्षिक ब्याज भी देना होगा।



यह मामला मुंबई के केसी लॉ कॉलेज के छात्र यदुकृष्णन सी से जुड़ा है। उन्हें आपात स्थिति में मुंबई के लोकमान्य तिलक टर्मिनस से केरल के कायमकुलम जाना था। इसके लिए उन्होंने नेत्रावती एक्सप्रेस में टिकट बुक कराया था। बुकिंग के समय उनका टिकट प्रतीक्षा सूची में 77वें नंबर पर था, जो बाद में आरएसी 44 हो गया। लेकिन आरक्षण चार्ट तैयार होने के बाद टिकट की स्थिति अचानक प्रतीक्षा सूची में पहले नंबर पर कर दी गई और टिकट स्वतः रद्द हो गया।

यात्री ने टिकट के लिए 1,819 रुपये चुकाए थे। टिकट रद्द होने पर रेलवे ने 1,730 रुपये वापस किए और 65 रुपये शुल्क के रूप में काट लिए। यात्री का कहना था कि उन्होंने स्वयं टिकट रद्द नहीं कराया था और न ही रेलवे की ओर से उन्हें इसकी कोई पूर्व सूचना दी गई थी। रेलवे की इस कार्रवाई के कारण उन्हें 9 सितंबर 2024 को उसी ट्रेन से यात्रा करने के लिए 2,339 रुपये का तत्काल उपलब्ध टिकट खरीदना पड़ा।

यदुकृष्णन ने सूचना के अधिकार के तहत जानकारी मांगी तो पता चला कि आरएसी 44 को प्रतीक्षा सूची में बदलने की कोई निर्धारित नीति नहीं थी। रेलवे ने सफाई में कोच में बदलाव के कारण सीटों का दोबारा आवंटन होने की बात कही। वहीं, आईआरसीटीसी ने आयोग के सामने दलील दी कि उसकी भूमिका केवल टिकट बुकिंग का माध्यम उपलब्ध कराने तक सीमित है। आयोग ने आईआरसीटीसी को इस मामले में जिम्मेदार नहीं माना।

आयोग के अध्यक्ष मोहनदासन के और सदस्य प्रीति शिवरामन सी तथा मोहम्मद इस्माइल सीवी की पीठ ने रेलवे को यात्री को मानसिक परेशानी के लिए 20 हजार रुपये और मुकदमे के खर्च के लिए 5 हजार रुपये देने का आदेश दिया। इस फैसले को यात्रियों के अधिकारों और रेलवे की जवाबदेही के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

नगर में सड़कों पर लगती सब्जी और फल की दुकानें, बाधित होता यातायात, नगरपालिका बेबस

सड़क पर बैठे सब्जी विक्रेताओं के लिए वैकल्पिक व्यवस्था तो की लेकिन अमली जामा पहनाने में विफल नगरपालिका

माही की गूंज, झाबुआ।
मुजम्मिल मंसुरी

वैसे तो जिला मुख्यालय हमेशा से ही अपनी मूलभूत सुविधाओं को लेकर आंसू बहाता रहा है। मगर नगरपालिका या जिला प्रशासन समस्याओं से जूझते इस जिला मुख्यालय को कभी आजाद नहीं करा पाया है। कहीं पेयजल समस्या, तो कहीं सड़क समस्या तो कहीं यातायात समस्या तो कहीं पार्किंग समस्या, तो कहीं अतिक्रमण की मार। इन समस्याओं ने दशकों से शहर का पीछा छोड़ा ही नहीं। हालांकि जिला मुख्यालय पर इन समस्याओं से निपटने के लिए नगरपालिका मौजूद है, लेकिन नगरपालिका में बैठी परिषद कभी अपनी इच्छा शक्ति जगा ही नहीं सकी। नतीजा आमजन को जिला मुख्यालय होने के बावजूद मूलभूत समस्याओं से रोज दो-चार होना पड़ता है। पिछले दशकों में शहर में लगातार यातायात का दबाव बढ़ता ही रहा है। लेकिन होने वाली समस्याओं का समाधान अब तक किसी के पास दिखाई नहीं दिया है। नगरपालिका हो या यातायात विभाग महज माथा उतारनी ही करते नजर आते है। हर त्यौहारिया सीजन में नगरपालिका और यातायात अमला ढिंढोरे पीटता निकलता तो है लेकिन स्थिति हमेशा ही ढाक के तीन पात बनी रहती है।

वर्तमान स्थिति में जिला मुख्यालय के मुख्य मार्ग इतने सकरे है कि, यहां चार पहियां वाहनों को प्रतिबंधित कर दिया गया है। बावजूद इसके स्थिति यह है कि, बाजार से दो पहियां वाहन निकलना भी किसी चुनौती से कम नजर नही आता। कारण सड़कों पर लगने वाली दुकानों और बाजार की दुकानों का सड़कों पर आ जाना। नगरपालिका यू ंतो साल में कई मर्तबा अतिक्रमण हटाओं मुहिम की नौटंकी करती रहती है लेकिन क मजो र इच्छा शक्ति की बदौलत स्थितियों में कभी सुधार देखने को नहीं मिलता। शहर के फ ुट पा थ हमेशा अतिक्रमण की चपेट से पटे रहते है, तो मुख्य मार्ग की सड़कों पर भी ग्रामीण सब्जी विक्रेताओं द्वारा कब्जा कर लिया जाता है। नतीजा जिस आमजन के चलने के लिए सड़कें बनी है उसी सड़कों पर चलने के लिए कदम-कदम पर जमीन ढूंडता दिखाई पड़ता है। मुख्य बाजार में हर दुकान के आगे दुकानदारों ने करीब 5-7 फीट कब्जा कर दुकानों का सामान सड़क तक जमा दिया है। तो वहीं दूसरी ओर सब्जी मंडी का नियत स्थान होने के बावजूद पूरे शहर में सब्जी की दुकानें सड़कों पर बिखरी पड़ी है।



इस तरह शहर की सड़कों पर फैला है सब्जी विक्रेताओं का जाल। जिससे बिगड़ती यातायात व्यवसायी और राहगीरों को होती परेशानी।

हालांकि नगरपालिका ठेका पद्धती से रेड़ी और फुटपाथ पर लगी दुकानों से रोज 10-20 रुपए की वसूली करती है, लेकिन नागरिकों को सुविधा के नाम पर सिर्फ ठेंगा ही नसीब होता है। नगरपालिका के पास इस समस्या का स्थाई समाधान पिछले कई दशकों से नहीं है। सड़क पर लगने वाली दुकानों से रोज नगरपालिका उगाही तो करती है लेकिन उन्हे सही स्थान मुहैया नहीं करा पा रही है। नतीजे में दुकानदार जिसे जहां जगह मिल जाए वह वहीं अपनी दुकान सजा लेता है।



जेसीबी से समतलीकरण तो कराया लेकिन नगरपालिका यहां दुकानदारों को लाने में नाकाम ही साबित हुई है।

नगरपालिका भी इसे मुंह में मुंग ओरे देखती रहती है और अपनी उगाजी करती रहती है। ऐसी करीब शहर में 1 से 2 हजार दुकानें होंगी जो सड़कों या फुटपाथों पर संचालित हो रही है। नगरपालिका को इससे बैठक शुल्क के नाम पर हर रोज लगभग 15 से 20 हजार रुपये की कमाई होती है। महीनें का अंदाजा लगाया जाए तो लगभग 4 से 5 लाख रुपये महीना की वसूली। बावजूद इसके नगर की स्थिति जैसे कचरे का ढेर। नगर में फैल रही इस अव्यवस्था के समाधान का कोई हल नहीं है ऐसा तो नहीं, लेकिन नगरपालिका, जिला प्रषासन और यातायात विभाग की कमजोर इच्छा शक्ति अब नगरवासियों के लिए मुसिबत बनती दिखाई दे रही है।



शहर में स ब्ज ी विक्रेताओं के ि ल ए नगरपालिका ने स्थान नियत कर रखा है। शहर के पुराने चाचा नेहरू बालोद्यान को उजाड़ कर नगरपालिका ने यहां सब्जी विक्रेताओं को जगह दी थी। हालांकि यहां भी व्यवस्थाओं में भारी कमी नगरपालिका की ओर से देखी गई। नतीजा यह हुआ कि चाचा नेहरू बालोद्यान उर्फ सब्जी मंडी से सब्जी व्यापारी निकल कर सड़क पर आ गए। जिससे एमपीईबी और कांग्रेस कार्यालय की ओर जाने वाला रास्ता पूरी तरह से जाम होता दिखाई दिया है। यहां हर रोज की यही कहानी है चार पहियां तो ठीक दो पहियां वाहन भी यहां से बड़ी मुश्किल से निकल पाते है।

शहर की वर्तमान स्थिति तो यह है कि अब शहर के हर कोने में सब्जी बाजार दिखाई देने लगा है। चाचा नेहरू बालोद्यान के बाहर, नेहरू मार्ग, छतरी चौक, थांदला गेट, रूनवाल बाजार, कालका माता मंदिर के समीप, बस स्टेंड, मेघनगर नाका, राजगढ़ नाका आदि सभी जगह सब्जी की दुकानें व ठेले सड़कों पर सजे दिखाई पड़ते है। स्थिति यह है कि हर दुकानदार ने सड़क पर इस तरह कब्जा किया हुआ है मानों वह जगह उसकी बपौती हो। नतीजा पूरा का पूरा शहर यातायात और मूलभूत सुविधाओं के लिए जूझता दिखाई दे रहा है।

यह तो जिला मुख्यालय पर हर रोज की बात है, लेकिन साप्ताहिक हाटबाजार यानि रविवार के दिन यह स्थिति और भी भयावह हो जाती है। वैसे तो हाटबाजार मंडी प्रांगण में लगता है लेकिन यह सिर्फ दिखावे भर है। नगरपालिका की दुरदर्शिता और निकम्मे पन के कारण रविवार को मंडी प्रांगण में जो हाट बाजार लगता है उससे कई गुना ज्यादा दुकानें शहर की सड़कों पर दिखाई पड़ती है।

हालांकि नगरपालिका ने कुछ दिनों पहले व्यवस्था सुधारने की एक नाकाम और निठल्ली कोशिश जरूर की थी लेकिन वह उसे अमली जामा पहनाने में बिल्कुल भी सफल नहीं दिखाई दी। प्लान यह था कि शहर की सड़कों पर लगने वाली फल और सब्जी की दुकानों को यहां से हटाकर कहीं और सिफ्ट किया जाए। इसके लिए नगरपालिका ने बकायदा सज्जनरोड स्थित पुरानी गुजरी मैदान को तय किया। यहां जेसीबी से समतलीकरण किया गया और यह दावा किया गया कि, आने वाले दिनों में शहर की सड़कों पर लगने वाली फल व सब्जी की दुकानें यहां लगाई जाएगी। जब यह सूचना आम हुई तो कई दुकानदारों ने इस स्थान पर जगह रोकने के लिए अपने-अपने स्तर पर पत्थर व बल्ली लगाकर जगह रोक ली। पिछले रविवार से यहां बाजार लगना था, दुकानदार भी तैयार थे, जगह भी रूक चुकी थी, लेकिन नगरपालिका ने इतना निठल्लापन दिखाया कि सारी की सारी योजना धरी की धरी रह गई। रविवार के बाद चार दिन बित चुके है लेकिन नरगपालिका द्वारा नियत किए गए स्थान पर न तो नगरपालिका खुद पहुंच सकी और ना ही शहर की सड़कों पर फैले इन सब्जी व फल विक्रेताओं को यहां ला सकी। कुल मिलाकर जिला मुख्यालय की स्थिति अब भी ढाक के तीन पात है और आमजन नगरपालिका के निठल्लेपन का लगातार शिकार हो रहा है।

कलेक्टर का प्रतिबंधात्मक आदेश सिर्फ ढकोसला और कागजी घोड़े, ईंट भट्टों और निर्माण कार्यों में धड़ल्ले से हो रहा टैंकरों बन लाखों लीटर पानी का उपयोग

पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए जल स्त्रोतों से कृषि, व्यावसायिक एवं निजी प्रयोजनों हेतु जल निकासी प्रतिबंध बना ढकोसला



माही की गूंज, झाबुआ।

जिले को अल्पवर्षा के कारण जल अभावग्रस्त घोषित किया जा चुका है। 27 अक्टूम्बर को कलेक्टर ने एक आदेश जारी कर जिले में जल स्त्रोतों के उपयोग एवं निजी नलकूप खनन पर प्रतिबंधात्मक आदेश भी जारी किए थे। लेकिन कलेक्टर के इस आदेश के बावजूद जिले में जल स्त्रोतों का निजी व व्यावसायिक उपयोग धड़ल्ले से देखने को मिल रहा है। निर्माण कार्य यथावत चल रहे है तो व्यवसाय के लिए भी जल स्त्रोतों का जमकर दोहन किया जा रहा है।

जिला मुख्यालय की ही बात करें तो यहां हर कॉलोनी में निर्माण कार्य आसानी से देखे जा सकते है और इन निर्माण कार्यों में जल के दुरूयोग का तो आलम ही अलग है। इसके अलावा कई व्यवसायियों में भी अल्पवर्षा और प्रतिबंधात्मक आदेश के बावजूद धड़ल्ले से पानी का उपयोग किया जा रहा है। स्थिति को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि, कलेक्टर के जारी 'अल्पवर्षा एवं गिरते भूजल स्तर को देखते हुए जल स्त्रोतों के उपयोग एवं निजी नलकूप खनन पर प्रतिबंधात्मक आदेश' का 950 शब्दों से अधिक का फरमान ढकोसला और कागजी घोड़े साबित हो रहा है।

यह थे कलेक्टर के आदेश

जारी आदेश के अनुसार जिले में इस वर्ष औसत से कम वर्षा होने तथा भूजल स्तर में लगातार गिरावट के दृष्टिगत रखते हुए आगामी समय में संभावित पेयजल संकट की रोकथाम तथा आमजन को पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी, झाबुआ द्वारा जिले की संपूर्ण राजस्व सीमा में जल स्त्रोतों के उपयोग एवं निजी नलकूप खनन पर प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया गया है। इसके अंतर्गत जिले के समस्त नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों को जल अभावग्रस्त घोषित करते हुए जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक प्रतिबंध लागू किए गए हैं।

कार्यपालन यंत्री, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, झाबुआ से प्राप्त प्रस्ताव के अनुसार जिले में इस वर्ष औसत से कम वर्षा होने के कारण भूजल स्तर में अभी से गिरावट देखी जा रही है। अल्पवर्षा के कारण ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित पारंपरिक जल स्त्रोतों एवं जलाशयों का जलस्तर अत्यंत चिंताजनक स्थिति में है। ऐसी परिस्थितियों में आगामी समय में जिले के विभिन्न क्षेत्रों में पेयजल की समस्या उत्पन्न होने की संभावना है। इसी को ध्यान में रखते हुए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा जल स्त्रोतों के संरक्षण एवं पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबंधात्मक आदेश जारी करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था।

प्राप्त प्रस्ताव के आधार पर कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी, झाबुआ ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163 तथा मध्यप्रदेश पेयजल परिरक्षण अधिनियम, 1986 एवं संशोधन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जिले के संपूर्ण नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों को जल अभावग्रस्त घोषित कर समस्त जल स्त्रोतों को अधिग्रहित करने संबंधी प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किया है।

जल स्रोतों से कृषि, व्यावसायिक एवं निजी प्रयोजनों के लिए जल उपयोग प्रतिबंधित

जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित समस्त पारंपरिक जल स्त्रोतों एवं जलाशयों, जिनमें कुएं, बावड़ियां, तालाब, नदियां, नाले, बांध एवं शासकीय नलकूप शामिल हैं, से कृषि, व्यावसायिक एवं निजी प्रयोजनों के लिए मोटर पंपों तथा टैंकरों के माध्यम से पानी का उपयोग प्रतिबंधित रहेगा। इसके अतिरिक्त जिले की संपूर्ण राजस्व सीमा में निजी नलकूप (बोरवेल) खनन पर भी प्रतिबंध लगाया गया है। इन प्रतिबंधों का मुख्य उद्देश्य उपलब्ध जल संसाधनों का संरक्षण करना तथा आगामी समय में संभावित पेयजल संकट की स्थिति में आमजन को पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

शासकीय जल स्रोतों पर अवैध मोटर पंपों को हटाने के निर्देश

कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी द्वारा संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि, शासकीय जल स्त्रोतों पर अवैध रूप से स्थापित मोटर पंपों एवं जल निकासी के लिए उपयोग की जा रही अनधिकृत व्यवस्थाओं का सर्वेक्षण किया जाए। सर्वेक्षण के दौरान ऐसी व्यवस्थाएं पाए जाने पर उन्हें नियमानुसार हटाने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। साथ ही नगरीय निकायों, ग्राम पंचायतों एवं संबंधित विभागीय अधिकारियों को शासकीय जल स्त्रोतों की नियमित निगरानी करने तथा प्रतिबंधों का उल्लंघन पाए जाने पर संबंधित व्यक्तियों के विरुद्ध नियमानुसार वैधानिक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं।

प्रतिबंधों का उल्लंघन करने पर होगी वैधानिक कार्रवाई

आदेश में उल्लेख किया गया है कि प्रतिबंधात्मक निर्देशों का उल्लंघन करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध संबंधित विभाग एवं सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रचलित नियमों के अंतर्गत आवश्यक वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। जनसाधारण के हित एवं संभावित पेयजल संकट की गंभीरता को देखते हुए आदेश को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाना आवश्यक होने के कारण भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 की धारा 163(2) के अंतर्गत एकपक्षीय रूप से पारित किया गया है। आदेश का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता एवं मध्यप्रदेश पेयजल परिरक्षण अधिनियम, 1986 तथा संशोधन अधिनियम, 2002 में निहित प्रावधानों के अनुसार विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी।

आदेशों की अवहेलना

सिक्के के दूसरे पहलू पर अगर नजर डालें तो कलेक्टर के इन आदेशों के बावजूद कई लोग इन अदेशों की धज्जियां उड़ाते हुए इसकी अवहेलना कर रहे है। मगर प्रतिबंधात्मक आदेशों में उल्लेखित उल्लंघन की वैधानिक कार्रवाई अब तक कोई भी अधिकारी किसी भी जगह करता दिखाई नहीं दिया है। नतीजा कलेक्टर के जारी आदेशों का कोई भी खौफ न तो अधिकारियों में दिखाई दे रहा है और ना ही जल का दुरूपयोग और व्यवसायिक उपयोग करने वालों में।



निर्माण कार्यों में जल का दुरूयोग

आदेश में स्पष्ट कहा गया है कि, जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित समस्त पारंपरिक जल स्त्रोतों एवं जलाशयों, जिनमें कुएं, बावड़ियां, तालाब, नदियां, नाले, बांध एवं शासकीय नलकूप शामिल हैं, से कृषि, व्यावसायिक एवं निजी प्रयोजनों के लिए मोटर पंपों तथा टैंकरों के माध्यम से पानी का उपयोग प्रतिबंधित रहेगा। मगर शहर के हर कोने और कॉलोनी में नव निर्माण यथा स्थिति में चालू है और जल का व्यवसायिक उपयोग भी हो रहा है। निर्माण कार्य में लगने वाला जल टेंकरों से खरीद कर निर्माण कार्यों में उपयोग हो रहा है। तो शहर के दर्जनों आरओ वॉटर प्लांट व्यावसायी धड़ल्ले से भूमिगत जल का दोहन कर जमकर चांदी काटते दिखाई दे रहे है। इन पर न तो प्रतिबंधात्मक आदेश का असर दिखाई दे रहा है और ना ही उल्लंघन पर कार्रवाई की चिंता।



जिला मुख्यालय के आसपास ईंट भट्टो की भरमार

वैसे तो जिला मुख्यालय के आसपास दर्जनों की संख्या में ईंट भट्टे लगे हुए है। हर साल इन ईंट भट्टों से उठता धुंआ कई समस्याओं को जन्म देता है। सड़क के किनारे सटे यह ईंट भट्टे राहगीरों के फेफड़ों को धुंआ-धुंआ करते दिखाई देते है। मगर कभी भी प्रशासन इन्हे लगाम डालने की कोशिश करता नजर नहीं आता। मगर इस वर्ष जबकि जिला जल अभावग्रस्त घोषित किया जा चुका है और अल्पवर्षा के कारण आने वाले समय में जिले में जल की भारी कमी होने वाली है तब इस स्थिति को देखकर जिला प्रशासन ने जल के कृषि, व्यावसायिक एवं निजी प्रयोजनों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। मगर जिला मुख्यालय से सटे मौजीपाड़ा, किशनपुरी, गडवाड़ा और मोहनपुरा क्षेत्र में इन दिनों जमकर ईंट भट्टा व्यवसाय ईंटों के निर्माण में लगे हुए है। इन ईंट भट्टों पर ईंट निर्माण के लिए टेंकरों से लाखों लिटर पानी व्यावसायिक उपयोग में लिया जा रहा है। हालांकि जिले में कोई भी लाईसेंसी ईंट भट्ट या व्यवसायी नहीं है। जितने भी ईंट भट्टे शहर या जिले मे चारों ओर दिखाई दे रहे है वे लगभग अवैध ही कहे जा सकते है। क्योंकि यह न तो शासकीय मापदंडों पर खरे उतरते है और ना ही कोई प्रशासकीय स्वीकृति इन्हे प्राप्त होती है। बावजूद इसके यह ईंट भट्टे साल दर साल बदस्तूर यूंही चले आ रहे है। मगर जिला प्रशासन है कि नींद से जागने को ही तैयार नहीं है।

अब जबकि इस वर्ष जिले में अल्पवर्षा के कारण जिला जल अभावग्रस्त घोषित कर दिया गया है और जल कृषि, व्यावसायिक और निजी प्रयोजनों के लिए प्रतिबंधित आदेश जारी हो चुके है तो फिर इन ईंट भट्टों व व्यवसायियों को किसने और किस प्रकार की छूट दी है कि, वे प्रतिबंध के बावजूद टेंकरोंबन लाखों लीटर जल इस तरह व्यवसायिक उपयोग में लेकर ईंटों का निर्माण करे। क्या प्रशासन इन सब से अनभिज्ञ है या फिर वह सिर्फ आदेश जारी करना जानता है, उस पर अमल करना व करवाना नहीं।

मतदाता सूची पुनरीक्षण में घोर लापरवाही

निर्वाचन अधिकारी की नाक के नीचे बीएलओ गायब, मतदान केंद्रों पर लगे मिले ताले







माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

निर्वाचन आयोग, मतदाताओं को जोड़ने और सूची में सुधार करने का हर संभव प्रयास कर रहा है, लेकिन जमीनी स्तर पर कार्य करने वाले बीएलओ सहित सेक्टर अधिकारी अपने कार्यों को कागजों पर इतिश्री कर रहे हैं के वाकिये सामने आ रहै है। मामला सूची मतदाता पुनरीक्षण में घोर लापरवाही का है। नगर के 14 में से 13 केंद्रों पर बीएलओ नदारद, सिर्फ मतदान केंद्र 104 पर बीएलओ अनिल कुमार गुप्ता मिले। वहीं मतदान केंद्र 100 पर नियुक्त बीएलओ हेमेंद्र कुमार गुप्ता के लंबे समय से मेडिकल पर होने की सूचना प्राप्त हुई।

पुनरीक्षण-2027 के तहत मतदाता सूची के आलेख्य प्रकाशन के बाद नगर पेटलावद में दावे-आपत्तियों का काम सिर्फ कागजों पर चल रहा है। हमारे द्वारा नगर के सभी मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया गया तो हकीकत चौंकाने वाली निकली। नगर के 14 मतदान केंद्रों में से 13 केंद्रों पर बीएलओ मौके पर उपस्थित नहीं मिले। ज्यादातर केंद्रों पर तो ताला लगा मिला, कई पर सूची भी चस्पा नहीं थी।

मात्र एक केंद्र पर मिले बीएलओ

निरीक्षण के दौरान मात्र मतदान केंद्र क्रमांक 104 पर बीएलओ अनिल कुमार गुप्ता उपस्थित मिले। वे अपने केंद्र पर मतदाता सूची लेकर बैठे थे और आने वाले मतदाताओं के फॉर्म भी ले रहे थे। उन्होंने बताया कि, मतदाताओं में जागरूकता की कमी है, जिसके चलते कई बार मतदाताओं से सीधे संपर्क करना पड़ता है। बाकी जगहों पर लापरवाही का आलम यह रहा कि, जन परिसर में दो बीएलओ थे, उनमें से मौके पर एक भी उपलब्ध नहीं था। जो परिसर खुले थे, वहां किसी प्रकार की मतदाता सूची भी चस्पा नहीं थी, न ही बीएलओ को बैठने का कोई स्थान सुरक्षित दिखा।

ये बीएलओ अपने-अपने केंद्रों पर नहीं पाए गए

भाग क्र. 97 - महेश काग, क्र. 98 - शांतिलाल गेहलोत, क्र. 99 - अनिल कुमार त्रिवेदी, क्र. 100 - हेमेंद्र कुमार गुप्ता, क्र. 101 - देवेन्द्र कुमार भट्ट, क्र. 102 - विकास मुलेवा, क्र. 103 - गोपाल डामर, क्र. 105 - नीरज कुमार भट्ट, क्र. 106 - धर्मेन्द्र जैन, क्र. 107 - चन्द्रशेखर बैरागी, क्र. 108 - निलेश राठौर, क्र. 111 - कैलाशचन्द्र मैड़ा, क्र. 112 - नितेश जैन।

मतदाता परेशान, अधिकारी बेखबर

नगर के अलग-अलग मतदान केंद्रों के आसपास जानकारी लेने पर बताया कि, यहां सुबह से कोई नहीं आया। कुछ मतदाता चक्कर लगाकर लौट गए। बीएलओ अगर नियत स्थान पर उपलब्ध ही नहीं होंगे तो नाम जुड़वाना, सुधार करवाना हो तो कैसे काम हो पाएगा? इस संबंध में जब सेक्टर प्रभारियों से चर्चा की तो पता चला कि, सारा काम मोबाइल पर चल रहा है। कोई अधिकारी जिम्मेदारी से काम नहीं कर रहा, मौके के फोटो और नए फॉर्म ऑनलाइन कर कार्य होना बताया जा रहा है।

पेटलावद क्षेत्र के सेक्टर प्रभारी गोपाल काग से चर्चा की गई, जिनके पास पेटलावद का एकमात्र मतदान केंद्र है। इस केंद्र को छोड़कर ग्रामीण क्षेत्र के सभी केंद्रों पर जाना बताया, जबकि सेक्टर अधिकारी पेटलावद में रहते हैं और एक ही बूथ पेटलावद में है, उस पर नहीं गए, यह बात हजम नहीं है। एक ओर सेक्टर प्रभारी नितिन परमार, जिनके पास नगर के तीन केंद्र हैं, बाकी ग्रामीण क्षेत्रों के हैं। सेक्टर प्रभारी महोदय इस संबंध में कुछ बता ही नहीं पाए और ग्रामीण क्षेत्रों में जाने की बात कहने लगे। पेटलावद के किसी भी केंद्र पर जाने की पुष्टि नहीं कर पाए। सेक्टर प्रभारी अजय तिवारी, जिनके पास ज्यादातर नगर के केंद्र हैं, उन्होंने कॉल तक अटेंड नहीं किया। ग्रामीण क्षेत्रों में से एक सेक्टर अधिकारी बीआरसी रेखा गिरी से चर्चा की गई तो उन्होंने भी गोलमाल जवाब देते हुए पिछले दो-तीन दिनों में ऑनलाइन हुए फॉर्मों के आंकड़े देकर काम होना बताया। कुल मिलाकर सेक्टर की जिम्मेदारी संभाल रहे अधिकारी मोबाइल पर ही रिकॉर्ड मेंटेन करते दिखाई पड़ रहे हैं।



मतदान केंद्र 100 पर एकमात्र बीएलओ उपस्थित मिले, बाकी सभी केंद्रों पर मिले ताले।

सिर्फ खानापूर्ति तक रहा अभियान, प्रचार-प्रसार का अभाव, राजनीतिक दल भी नदारद

12 नवंबर को आलेख्य प्रकाशन हुआ, 11 दिसंबर तक दावे-आपत्तियां लेनी हैं और 4 जनवरी 2027 को अंतिम सूची प्रकाशित होनी है। लेकिन नगर में हालात देखकर लगता है कि, अभियान की सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है। यही हाल रहा तो सैकड़ों पात्र मतदाताओं के नाम छूट जाएंगे और गलतियां वैसी ही रह जाएंगी। वहीं प्रशासन की ओर से इस संबंध में प्रचार-प्रसार की कमी रही है। मतदान केंद्र के पास में रहने वाले मतदाताओं को भी इसकी जानकारी तक नहीं है। वहीं राजनीतिक स्तर पर मतदाता सूची को लेकर आपस में भिड़ने वाले राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता तक मतदान केंद्र के आसपास नहीं दिखे। ऐसे में बिना सुधार और नए नामों को जोड़े ही मतदाता सूची का प्रकाशन हो जाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति क्या होगी

जिस क्षेत्र का दौरा हमने किया, वह पेटलावद नगर का शहरी क्षेत्र था, जहां लोग जागरूक हैं। साथ ही विकासखंड निर्वाचन अधिकारी का मुख्यालय भी यही है। जिसका डर तक बीएलओ को नहीं कि कभी निर्वाचन अधिकारी का दौरा हो गया तो क्या जवाब देंगे? हालांकि पूरे विकासखंड के सभी बूथों पर से अधिकारी भी नियुक्त किए गए थे, जो खानापूर्ति के लिए बनाए गए। यह आलम शहरी क्षेत्र में था तो ग्रामीण क्षेत्रों के मतदान केंद्रों पर क्या स्थिति रही होगी, सहज ही पता लगाया जा सकता है।

अलग से पारिश्रमिक का भुगतान

ऐसा नहीं है कि, बीएलओ, जो कि शिक्षक हैं, उनको मिलने वाले वेतन में ही कार्य करना पड़ता है। निर्वाचन की ओर से इस कार्य के लिए अलग से पारिश्रमिक का भुगतान किया जाता है, जो कि वर्ष का दस से बारह हजार होता है। ज्यादातर स्थिति में निर्वाचन की ओर से मिलने वाले कार्यों में ऐसी ही लापरवाही की जाती है और जब कार्रवाई की स्थिति बनती है तो खानापूर्ति के लिए कागजी कार्रवाई दिखाकर बचाव किया जाता है।

नगर के मतदाताओं ने जिला निर्वाचन अधिकारी, एसडीएम पेटलावद और निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी से मांग की है कि, सभी बीएलओ को अपने-अपने मतदान केंद्रों पर समय पर बैठने के निर्देश दिए जाएं, अनुपस्थित बीएलओ पर कार्रवाई हो और केंद्रों पर बीएलओ के नाम-मोबाइल नंबर सहित सूचना चस्पा की जाए। साथ ही मतदाताओं के लिए प्रचार अभियान किसी भी आयोजन के पहले चलाया जाए, जिससे पता चले कि, किस प्रकार के कार्य कब होना है और कहां संपर्क करना है।







लगातार घटिया निर्माण की खुल रही पोल

झाबुआ मार्ग निर्माण पर उठे सवाल, दूसरी बार टूटी नाली

माही की गूंज, करवड़। अरूण(भोला)पाटीदार

432 करोड़ रुपये की लागत से निर्माणाधीन रतलाम-झाबुआ सड़क परियोजना की धीमी रफ्तार के बीच अब इसके निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर भी गंभीर सवाल खड़े होने लगे हैं। करवड़ बस स्टैंड के पास चल रहे कार्य में कथित लापरवाही से स्थानीय लोगों और राहगीरों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

सोमवार को करवड़ बस स्टैंड तिराहे पर बनी नाली एक बार फिर टूट गई। बताया जा रहा है कि यह दूसरी बार है जब यहां नाली टूटी है, जिससे क्षेत्र में दुर्घटना का अंदेशा बना हुआ है। इससे पहले भी यहां नाली टूटने की घटना सामने आ चुकी थी, जिसकी मरम्मत की गई थी। स्थानीय लोगों के अनुसार, इसी जगह पर पहले भी कई हादसे हो चुके हैं, इसके बावजूद जिम्मेदार अधिकारियों और एजेंसी का ध्यान इस ओर नहीं जा रहा है।

निर्माण कार्य की स्थिति को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता भंवरसिंह झाला ने नाराजगी जताते हुए कहा कि, वर्षों के इंतजार के बाद बन रहे इस मार्ग के काम में इतनी लापरवाही क्यों बरती जा रही है। उन्होंने कहा कि, घटिया निर्माण से कार्य की गुणवत्ता की पोल खुल रही है, लेकिन जिम्मेदार आंख मूंदे बैठे हैं। झाला ने चेतावनी दी कि यदि इसी तरह की लापरवाही के बीच कोई पुल क्षतिग्रस्त होता है या गिरता है और जनहानि होती है, तो इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा।



नल-जल योजना पाइपलाइन को भी नुकसान

करवड़ के सरपंच विकास बाबूलाल गामड़ ने भी निर्माण एजेंसी की कार्यप्रणाली पर प्रश्नचिह्न लगाए। उन्होंने बताया कि, पहले ठेकेदार द्वारा ग्राम की नल-जल योजना की लाइन तोड़ दी गई थी, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी झेलनी पड़ी थी। सरपंच गामड़ के मुताबिक, पुलिस चौकी के पास की पाइपलाइन अभी तक नहीं सुधारी गई है।

नियमों के तहत शहरी क्षेत्रों में सीमेंट कांक्रीट (सीसी) की सड़कें बननी हैं, लेकिन काम में देरी और निगरानी की कमी के कारण आम लोगों का सफर लगातार जोखिम भरा होता जा रहा है।

45 लाख की लागत से बना आयुर्वेदिक अस्पताल, लेकिन मूलभूत सुविधाओं का अभाव

माही की गूंज, खवासा। सुनील सोलंकी

क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने के उद्देश्य से करीब 45 लाख रुपए से अधिक की लागत से खवासा क्षेत्र के रत्नी ग्राम पंचायत मे एक आयुर्वेदिक अस्पताल भवन का निर्माण करवाया गया। निर्माण एजेंसी मध्य प्रदेश आवास विभाग भोपाल थी। तथा इसकी मानेट्रिंग भी भोपाल से ही सब इंजीनियर शुभम बरवे कर रहे थे। तो वही ठेका आकर कंस्ट्रक्शन कंपनी भोपाल द्वारा इसका निर्माण किया गया था। ठेकेदार की और से सेमी ठेकेदार कृष्णा गुजर द्वारा कार्य करवाया गया। लेकिन विडंबना यह है कि, लाखों रुपए खर्च होने के बावजूद अस्पताल में आज तक पानी और बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव बना हुआ है। ऐसे में अस्पताल में उपचार के लिए आने वाले मरीजों के साथ-साथ वहां पदस्थ अस्पताल स्टॉफ को भी भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

हालात यह हैं कि, अस्पताल में बिजली की समुचित व्यवस्था नहीं होने से पंखे तक नहीं चल पा रहे हैं। वहीं पानी की व्यवस्था नहीं होने के कारण अस्पताल के शौचालय भी उपयोग के लायक नहीं रह गए हैं। गर्मी हो या सामान्य दिन, मरीजों और कर्मचारियों को बुनियादी सुविधाओं के अभाव में परेशान होना पड़ रहा है।

लाखों का भवन, लेकिन सुविधाएं नदारद

ग्रामीणों का सवाल है कि, जब शासन द्वारा लाखों रुपए खर्च कर अस्पताल भवन का निर्माण करवाया गया, तो फिर उसमें पानी और बिजली जैसी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित क्यों नहीं की गईं...? आखिर अस्पताल भवन निर्माण पर इतनी बड़ी राशि खर्च करने के बाद भी मरीजों को बुनियादी सुविधाओं से वंचित क्यों रहना पड़ रहा है...?



सुविधाओं की राह देखता औषधालय।

सुविधाओं के बाद भी एनओसी कैसे जारी हुई

जानकारी रखने वाले लोगों के अनुसार, जब अस्पताल भवन का लोकार्पण किया गया था, उस समय यहां सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होने की बात कही गई थी। बताया जाता है कि, झाबुआ जिले से आयुष विभाग के अधिकारियों द्वारा सुविधाएं उपलब्ध होने के आधार पर एनओसी (अनापत्ति प्रमाण पत्र) भी जारी कर दी गई थी। वहीं निर्माण कार्य से जुड़े ठेकेदार को भी पूरा भुगतान किए जाने की जानकारी सामने आ रही है।

ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि यदि भवन में सभी सुविधाएं उपलब्ध थीं तो वर्तमान में पानी और बिजली की व्यवस्था क्यों नहीं है? क्या निर्माण कार्य के दौरान सुविधाओं को लेकर उचित जांच की गई थी या फिर कागजों में ही व्यवस्थाएं पूर्ण मान ली गईं?

आयुष अधिकारियों से ग्रामीणों की मांग

ग्रामीणों का आरोप है कि जिले के आयुष विभाग के जिम्मेदार अधिकारी इस समस्या से अवगत होने के बावजूद ध्यान नहीं दे रहे हैं। अस्पताल जैसी महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संस्था में बुनियादी सुविधाओं का अभाव विभागीय कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर रहा है।

ग्रामीणों ने जिला प्रशासन एवं आयुष विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों से मांग की है कि, अस्पताल भवन में पानी और बिजली की व्यवस्था तत्काल सुनिश्चित करवाई जाए। साथ ही निर्माण कार्य की गुणवत्ता, उपलब्ध सुविधाओं और जारी की गई एनओसी की निष्पक्ष जांच करवाई जाए, ताकि लाखों रुपए खर्च होने के बावजूद मरीजों को परेशानियों का सामना न करना पड़े।

वही रत्नी में पदस्थ आयुर्वेदिक अस्पताल के प्रभारी डॉक्टर ऐश्वर्य विजयवर्गी से जानकारी ली तो उन्होंने कहा कि, यहां लाइट की व्यवस्था भी नहीं है, ना ही पानी की व्यवस्था है। झाबुआ से ही भवन की एनओसी जारी कर दी गई हमें पता ही नहीं चला कि कब एनओसी दी गईं। हमें तो वरिष्ठ अधिकारियों ने कहा कि आप वहां अस्पताल में कार्य करिए तो हम कार्य कर रहे हैं लेकिन यहां पानी की सुविधा भी नहीं है ना ही लाइट की व्यवस्था भी अभी तक नहीं हो पाई है। ठेकेदार से जब भी संपर्क किया जाता है तो उनके द्वारा हमारा फोन ही नहीं उठाया जाता है।

अब देखना यह है कि, जिम्मेदार अधिकारी इस मामले को गंभीरता से लेते हुए अस्पताल में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाते हैं या फिर मरीजों और अस्पताल स्टॉफ को इसी तरह परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

संपादकीय

भाजपा-अकाली पुनर्मिलन



पिछले कुछ महीनों से पंजाब व दिल्ली में भाजपा व अकाली दल की तरफ से जिस तरह की बयानबाजियां और राजनीतिक हलचल सामने आ रही थी, उसके निहितार्थ स्पष्ट ही थे। जो संकेत दे रहे थे कि पंजाब में विधानसभा चुनाव से पहले शिरोमणि अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी का फिर एक बार साथ आना लगभग तय ही है। वर्ष 2027 के आसन्न पंजाब विधानसभा चुनाव से ठीक पहले इन दोनों दलों का साथ आने का फैसला बताता है कि यह गठबंधन सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी और मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को चुनौती देने के ठोस प्रयास कर कर रहा है। इस गठबंधन की घोषणा गुरु नानक देव जी के प्रकाश उत्सव के मौके पर की गई है, जिसके ऐतिहासिक और प्रतीकात्मक, दोनों ही तरह के महत्व हैं। यहां उल्लेखनीय है कि भारतीय जनता पार्टी और अकाली दल ने पहली बार तीन दशक पहले भी हाथ मिलाया था। उस समय इस गठबंधन को आतंकवाद से उबरते पंजाब में हिंदू-सिख एकता के प्रतीक के रूप में देखा जाता था। कालांतर दोनों दलों के रिश्तों में खटास उस समय आई, जब केंद्र सरकार द्वारा लाए गए तीन विवादित कानूनों के विरोध में व्यापक जनाक्रोश दिखा। किसानों के आक्रोश के चलते अकाली दल को अपना जनाधार खिसकता नजर आया था। कालांतर वर्ष 2020 में अकाली दल ने भाजपा नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से नाता तोड़ लिया था। बहरहाल, इस गठबंधन की घोषणा के बाद जिस तरह के बयान गृहमंत्री अमित शाह की तरफ से आए हैं, वह दर्शाता है कि पिछले एक दशक में शिरोमणि अकाली दल के सिमटते जनाधार के बावजूद इस क्षेत्रीय दल को पर्याप्त महत्व दिया जा रहा है। अमित शाह ने गठबंधन की घोषणा के बाद कहा कि अकाली दल पंजाब में बड़े भाई की भूमिका में रहेगा। साथ ही यदि गठबंधन की जीत हुई तो मुख्यमंत्री पद अकाली दल को ही मिलेगा। वैसे यह एक हकीकत है कि इस गठबंधन के बावजूद पंजाब के राजनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल देना आसान भी नहीं होगा।

वैसे आज भी शिरोमणि अकाली दल पर साल 2025 की बेअदबी की घटनाओं और उसके बाद हुए राज्यव्यापी विरोध-प्रदर्शनों का बोझ है। जिसने उस समय अकाली सरकार को हिलाकर रख दिया था। वहीं, केंद्र में सत्ताधारी भाजपा के खिलाफ तीन कृषि कानूनों को लेकर उपजे गुस्से को पूरी तरह समाप्त नहीं समझ लेना चाहिए। तब किसान काफी नाराज हुए थे और उन्होंने दिल्ली की सीमाओं पर पूरे एक साल तक आंदोलन किया था। अंतत- नवंबर 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इन कानूनों को वापस लेने की घोषणा की थी। लेकिन इसके बावजूद आगामी चुनावों में भाजपा को कोई सकारात्मक प्रतिसाद पंजाब की जनता की तरफ से नहीं मिला था। तीन माह बाद, 2022 के विधानसभा चुनावों में भाजपा को सिर्फ दो सीटों में ही संतोष करना पड़ा था। कमोबेश शिअद की स्थिति भी कोई अच्छी नहीं रही थी। उसे तब सिर्फ तीन ही सीटें मिली थीं। निस्संदेह, यह अकाली दल का अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन था। इसके विपरीत आम आदमी पार्टी ने तब रिकॉर्ड जीत दर्ज की थी। बहरहाल, भाजपा और शिअद के इस पुनर्मिलन से दो मुख्य सवाल खड़े होते हैं। क्या इस गठबंधन के पीछे पंजाब के उन्नयन को लेकर कोई साझा विज़न है? या ये फिर महज चुनावी गणित ही है? सवाल यह भी है कि क्या यह गठबंधन दोनों दलों के लिये लाभदायक साबित होगा? निस्संदेह, आज पंजाब गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसमें आर्थिक दबाव भी एक बड़ा कारण है। राज्य गंभीर बेरोजगारी की चपेट में है। वहीं राज्य में नशीले पदार्थों का बढ़ता कारोबार व सेवन एक गंभीर चुनौती है। हालांकि, भाजपा ने पंजाब में नशे के खात्मे को अपनी प्राथमिकता बताया है और नशामुक्त पंजाब का रोडमैप भी सार्वजनिक किया है। जब पंजाब के राज्यपाल को कहना पड़ता है कि यहां गोलियां पटाखों की तरह चलती हैं, तो गैंगस्टरों के पसरे आतंक को समझा जा सकता है। शिअद और भाजपा के इस गठबंधन के लिये असली इम्तिहान यह भी होगा कि वे मतदाताओं को कैसे यकीन दिलाएंगे कि यह पंजाब के लिये सबसे बेहतर विकल्प है?

जोनाथन का जीनोम खोलेगा लंबी उम्र का राज


मुकुल व्यास

कछुए धरती पर सबसे लंबी उम्र वाले जीवों में गिने जाते हैं। दुनिया के कुछ द्वीपों में रहने वाले विशाल कछुओं की उम्र 150 साल या उससे भी अधिक हो सकती है। इस समय दुनिया का सबसे उम्रदराज कछुआ दक्षिण अटलांटिक महासागर में स्थित सेंट हेलेना द्वीप पर रह रहा है। जोनाथन नाम के इस विशाल कछुए के डीएनए में बुढ़ापे को रोकने के राज छिपे हुए हैं। इस कछुए में 287 ऐसे अनोखे जीन वेरिएंट पाए गए हैं, जो डीएनए की मरम्मत और बुढ़ापे से लड़ने में मदद करते हैं। वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि इनसे इंसानों के इलाज के लिए कुछ अहम सुराग मिल सकते हैं।

जोनाथन जब 1832 में पैदा हुआ था, तब चार्ल्स डार्विन एक युवा खोजकर्ता थे और महारानी विक्टोरिया ने अभी तक गद्दी नहीं संभाली थी। हैरानी की बात यह है कि लगभग दो सदियां बीत जाने के बाद भी जोनाथन जीवित है। वैज्ञानिकों को उसके शरीर में कुछ खास बातें देखने को मिली हैं। 194 साल की अनुमानित उम्र होने के बावजूद जोनाथन के डीएनए में मरम्मत और मेटाबॉलिज्म (चयापचय) को नियंत्रित करने वाले ऐसे आनुवंशिक तंत्र हैं, जो बहुत कम उम्र के कछुओं से काफी मिलते-जुलते हैं।

पिछले 144 सालों से जोनाथन सेंट हेलेना द्वीप पर रह रहा है। वह 1882 में सेशेल्स से सेंट हेलेना के गवर्नर को उपहार के तौर पर दिया गया था। उस समय वह पूरी तरह विकसित हो चुका था और तब से उसने अपनी जिंदगी का अधिकांश समय गवर्नर के निवास 'प्लांटेशन हाउस' के परिसर में घूमते हुए बिताया है।

जोनाथन की लंबी उम्र के पीछे के जैविक कारणों का पता लगाने के लिए अमेरिका की कैलेल नामक संस्था के शोधकर्ताओं ने उसके डीएनए और उसकी गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले तंत्र की जांच की। यह संस्था दीर्घायु पर शोध करती है। किसी विशाल कछुए के 'एपिजीनोम' (जीन को चालू या बंद करने वाले स्विच की प्रणाली) की जांच करने वाला यह पहला अध्ययन है। ये स्विच आमतौर पर समय के साथ बदलते रहते हैं, जिससे बुढ़ापा आता है। लेकिन जब शोधकर्ताओं ने जोनाथन के एपिजीनोम की तुलना कम उम्र के विशाल अल्डाबरा कछुओं से की, तो उन्हें डीएनए की मरम्मत और मेटाबॉलिज्म को नियंत्रित करने वाले स्विच में बहुत समान पैटर्न देखने को मिले। अल्डाबरा कछुओं का जीवनकाल 100 से 150 साल के बीच होता है।

इस अध्ययन में शामिल कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक डॉ. जस्टिन गेरलाक ने बताया कि जोनाथन में ऊर्जा उत्पादन और डीएनए की मरम्मत से जुड़े जीन रेगुलेटर लगभग दो सदियों से बेहद स्थिर बने हुए हैं। शोधकर्ताओं ने 194 वर्षीय जोनाथन में 287 ऐसे खास जीन वेरिएंट की पहचान की है, जो उम्र बढ़ने के सामान्य प्रभावों को कम करते हैं। ये वेरिएंट क्षतिग्रस्त डीएनए की मरम्मत, सूजन को कम करने, इंसुलिन को नियंत्रित करने और कैंसर को रोकने जैसी प्रक्रियाओं में भूमिका निभाते हैं। डीएनए और एपिजीनोम से मिले नतीजे बताते हैं कि जोनाथन में सुरक्षात्मक आनुवंशिक विशेषताओं और प्रमुख जीनों के नियमन में स्थिरता का अनूठा मेल है।



गेरलाक ने कई दशकों तक विशाल कछुओं के पारिस्थिति की तंत्र और उनके संरक्षण का अध्ययन किया है, लेकिन उनकी असाधारण रूप से लंबी उम्र पर यह उनका पहला शोध है।

गैलापागोस और सेशेल्स द्वीपों के विशाल कछुए उन जानवरों के आखिरी बचे हुए प्रतिनिधि हैं, जिनका कभी दुनिया के कई द्वीपों के पारिस्थितिकी तंत्र में दबदबा हुआ करता था। दुनिया में बहुत कम ऐसे जीव हैं, जो हमें गैलापागोस और सेशेल्स द्वीपों के विशाल कछुओं की तुलना में उम्र बढ़ने की प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी दे सकते हैं। इस अध्ययन के वरिष्ठ लेखक स्टीफन क्लार्क का कहना है कि प्रकृति ने उम्र बढ़ने की पहेली को पहले ही अद्भुत तरीकों से सुलझा लिया है। जोनाथन का जीनोम (जीनों का संपूर्ण समूह) सेल्युलर रेजिलिएंस यानी कोशिकाओं की सहनशक्ति और जीवटता का खाका प्रस्तुत करता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अच्छे जीन और आनुवंशिक क्षति से बचाव की क्षमता के कारण ही जोनाथन लगभग दो सदियों तक जीवित रह पाया है। वैज्ञानिकों का लक्ष्य इस नई खोज का उपयोग आम लोगों के लिए व्यावहारिक और किफायती इलाज विकसित करने में करना है। बढ़ती उम्र लगभग हर उस पुरानी बीमारी के लिए सबसे बड़ा जोखिम कारक है, जिसका हम सामना करते हैं।

इस बीच, एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि इटली के सार्डिनिया द्वीप पर स्थित बोलोटाना नामक पहाड़ी गांव की महिलाएं असाधारण रूप से लंबी उम्र जीती हैं। 'फ्रंटियर्स इन एजिंग' पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, इस गांव में 70 साल की उम्र तक पहुंचने वाली लगभग 13.8 प्रतिशत महिलाएं 100 वर्ष या उससे अधिक आयु तक जीवित रहती हैं। यह दर इटली के राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी अधिक है। वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने इस गांव को नए 'ब्लू जोन' के संभावित केंद्र के रूप में पहचाना है।

ब्लू जोन दुनिया के उन विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों को कहा जाता है, जहां के निवासी सामान्य लोगों की तुलना में अधिक उम्र (अक्सर 100 साल या उससे अधिक) तक जीवित रहते हैं और उनका स्वास्थ्य भी बेहतर रहता है। इसकी अवधारणा को सबसे पहले शोधकर्ता डैन ब्यूटनर ने लोकप्रिय बनाया था। दुनिया में मुख्य रूप से पांच स्थानों को 'ब्लू जोन' के रूप में मान्यता प्राप्त है। ये हैं- ओकिनावा (जापान), सार्डिनिया (इटली), निकोया प्रायद्वीप (कोस्टा रिका), इकारिया (ग्रीस) और लोमा लिंडा (कैलिफोर्निया)।

वैज्ञानिकों का कहना है कि शारीरिक सक्रियता दीर्घायु का एक बड़ा कारण हो सकती है। इस गांव के लोग पहाड़ी रास्तों और ढलान वाली गलियों में पैदल चलते हैं, जिससे वे पूरे दिन सक्रिय रहते हैं। दूसरा कारण खान-पान है। इनका पारंपरिक आहार मुख्य रूप से वनस्पति पर आधारित होता है, जिसमें फल, सब्जियां, बीन्स, गेहूं और जैतून का तेल शामिल हैं। तीसरा बड़ा कारण यहां के लोगों का मजबूत सामाजिक जुड़ाव है। परिवार, दोस्तों और समुदाय के साथ मेल-जोल तथा धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी इनकी अच्छी सेहत का एक बड़ा राज है। प्रायः हर ब्लू जोन के लोग इसी तरह की जीवनशैली अपनाते हैं।

जापान के ओकिनावा में लोग 'हारा हाचि बू' नियम का पालन करते हैं। वे 80 प्रतिशत पेट भरने पर ही खाना बंद कर देते हैं। ये लोग प्रार्थना करने, झपकी लेने या दोस्तों के साथ समय बिताने जैसे तरीकों से तनाव कम रखते हैं।

ऊर्जा सुरक्षा और खाद्य आपूर्ति को कीजिए मजबूत

भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा संकट और मौसम की मार के कारण वैश्विक महंगाई का दबाव बढ़ रहा है। भारत सहित दुनिया के कई देशों में इसका असर आम आदमी की रसोई और रोजमर्रा के खर्चों पर पड़ रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की अक्तूबर, 2026 की 'वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक' रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक महंगाई की औसत दर 2025 के 4.1 फीसदी से बढ़कर 2026 में 4.7 फीसदी रहने का अनुमान है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में यह दर 5.7 फीसदी, जबकि विकसित अर्थव्यवस्थाओं में 3.2 फीसदी रह सकती है। पश्चिम एशिया में संघर्ष, होर्मुज जलडमरूमध्य से तेल की आपूर्ति में बाधा, रूस-यूक्रेन युद्ध और खाद्य उत्पादन पर मौसम के असर से दुनियाभर के बाजार प्रभावित हो रहे हैं। इससे आयात पर निर्भर देशों की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं।

वर्ष 2007-08 में खाद्य और तेल संकट तथा 2021-23 में कोविड महामारी के बाद आपूर्ति श्रृंखला में आई बाधाओं ने वैश्विक महंगाई को तेज किया। वर्ष 2022 में विकसित अर्थव्यवस्थाओं में महंगाई 7.3 फीसदी और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में 9.6 फीसदी तक पहुंच गई। वस्तुतः महंगाई बढ़ने के पांच प्रमुख कारण हैं। इनमें सबसे बड़ी वजह भू-राजनीतिक संघर्ष है। रूस-यूक्रेन युद्ध और मध्य पूर्व के संकट ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आपूर्ति व्यवस्था को प्रभावित किया है। ब्लैक सी क्षेत्र से अनाज के निर्यात और समुद्री परिवहन में बाधाओं से खाद्य आपूर्ति प्रभावित होती है। इससे माल ढुलाई और कच्चे माल की लागत भी बढ़ती है।

दूसरी बड़ी वजह तेल की बढ़ती कीमतें हैं। मध्य पूर्व के संकट से तेल और गैस की आपूर्ति प्रभावित होने पर कीमतें बढ़ती हैं। इसका असर पेट्रोल-डीजल तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवहन, बिजली, खाद्य उत्पादन और रोजमर्रा की वस्तुओं की लागत भी बढ़ जाती है। अर्थशास्त्र में इसे 'नेगेटिव सप्लाई शॉक' कहा जाता है।



तीसरी वजह विकसित देशों में सरकारी खर्च का बढ़ना है। अमेरिका और यूरोप सहित कई विकसित अर्थव्यवस्थाओं में सरकारें विभिन्न योजनाओं पर अधिक खर्च कर रही हैं। इससे बाजार में मांग बढ़ती है और उत्पादन उसी अनुपात में नहीं बढ़ने पर वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें ऊपर जाने लगती हैं।

चौथी वजह जलवायु परिवर्तन है। सूखा, बाढ़, अत्यधिक गर्मी और अनियमित बारिश कृषि उत्पादन को प्रभावित कर रही हैं। इससे खाद्यान्न की पैदावार घटने और आपूर्ति प्रभावित होने का खतरा है। मांग की तुलना में उपलब्धता कम होने पर खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ जाती हैं।

पांचवीं वजह एआई में बढ़ता निवेश है। दुनिया की टेक कंपनियां एआई से जुड़ा बुनियादी ढांचा विकसित करने पर भारी खर्च कर रही हैं। इससे बिजली, तकनीकी उपकरणों और निर्माण संसाधनों की मांग बढ़ रही है। मांग आपूर्ति से अधिक होने पर कीमतें बढ़ने लगती हैं। अर्थशास्त्र में इसे 'डिमांड-पुल इन्फ्लेशन' कहते हैं।

हालांकि, भारत के सामने भी महंगाई की गंभीर चुनौती है। ऊर्जा जरूरतों और औद्योगिक कच्चे माल के लिए आयात पर निर्भरता के कारण वैश्विक कीमतों में बढ़ोतरी का सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। कच्चा तेल महंगा होने से परिवहन और उत्पादन लागत बढ़ती है। वहीं, रुपये पर दबाव से आयात बिल भी बढ़ सकता है। ऐसे में महंगाई नियंत्रित रखते हुए विकास की रफ्तार बनाए रखना भारत के लिए बड़ी चुनौती होगी।

वैश्विक स्तर पर भी खाद्य कीमतों का दबाव चिंता का विषय है। विश्व बैंक के अनुमानों के अनुसार, वर्ष 2026 में खाद्यान्नों की कीमतों में 10 फीसदी और 2027 में अतिरिक्त 7 फीसदी वृद्धि होने की आशंका है। वहीं, खाद्य एवं कृषि संगठन के आंकड़ों के मुताबिक, अक्तूबर, 2026 में ग्लोबल फूड प्राइस इंडेक्स में 6 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई। दूसरी ओर, आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन के अक्तूबर 2026 के महंगाई संबंधी आंकड़ों में अर्जेंटीना 33.1 फीसदी के साथ पहले और तुर्किये 29.7 फीसदी के साथ दूसरे स्थान पर हैं। इनके बाद लिथुआनिया 6.7 फीसदी, कोलंबिया 6.3 फीसदी, भारत 6 फीसदी, आइसलैंड 5.9 फीसदी और बुल्गारिया 5.7 फीसदी की महंगाई दर के साथ क्रमशः तीसरे से सातवें स्थान पर हैं।

आईएमएफ की 'वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक' रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक महंगाई दर 2026 के 4.7 फीसदी से घटकर 2027 में 4.1 फीसदी रहने का अनुमान है। हालांकि, महंगाई में यह संभावित गिरावट पश्चिम एशिया में तनाव कम होने, होर्मुज जलडमरूमध्य से तेल की आपूर्ति सामान्य होने और ब्लैक सी क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियां सुधरने पर निर्भर करेगी। वहीं, अल नीनो का प्रभाव बढ़ने से खाद्य पदार्थों की कीमतों पर दबाव बढ़ सकता है।


ऋषभ मिश्रा

वस्तुतः वैश्विक महंगाई अब केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि भू-राजनीति, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और बदलती तकनीकी प्राथमिकताओं से जुड़ी व्यापक चुनौती बन चुकी है। इसका सबसे अधिक असर विकासशील देशों और निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के परिवारों पर पड़ता है, क्योंकि उनकी आय का बड़ा हिस्सा भोजन, ईंधन, आवास और परिवहन जैसी बुनियादी जरूरतों पर खर्च होता है। भारत जैसे आयात पर निर्भर देश के लिए यह चुनौती और गंभीर है। ऐसे में सरकार को महंगाई नियंत्रण के लिए केवल मौद्रिक नीतियों पर निर्भर रहने के बजाय ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देने, कृषि आपूर्ति श्रृंखला मजबूत करने, खाद्यान्न भंडारण क्षमता विकसित करने और आयात निर्भरता घटाने पर विशेष ध्यान देना होगा।

बर्बरता व विस्थापन के त्रास और धूमिल आस


डॉ. वीरेंद्र महाजन

आजादी के ठीक बाद पाकिस्तानी कबायली आक्रमण व हफ्तों की भीषण घेराबंदी के बाद ऐतिहासिक शहर मीरपुर का पतन हुआ। 25 नवंबर, 1947 को हमले के बाद हुआ सामूहिक नरसंहार, बड़े पैमाने पर अपहरण, लूटपाट और जबरन निष्कासन का एक सुनियोजित षड्यंत्र था। हिंदू और सिख अल्पसंख्यकों को चुन-चुनकर निशाना बनाया गया। हर साल 25 नवंबर को मीरपुर के विस्थापित परिवार 'मीरपुर बलिदान दिवस' मनाते हैं। यह दिन जीवित बचे लोगों और वंशजों के लिए यह रिसता गहरा घाव है। जो समेटे हुए हिंसक विस्थापन, कूटनीतिक विस्मृति और संस्थागत उपेक्षा के उन्यासी वर्षों का दर्द।

मीरपुर के लोगों ने किसी युद्ध के दौरान पराजित पक्ष के साथ आदिम क्रूरता झेली। यह सामूहिक नरसंहार, सामूहिक अपहरण, लूटपाट और बेदखली का सुनियोजित षड्यंत्र था। महिलाओं का अपहरण कर अमानवीय अत्याचार किए गए; समाज के बुजुर्गों, पेशेवरों और नागरिक नेताओं की निर्मम हत्या की गई। रातों-रात मीरपुर, भीमबर, कोटली, मुजफ्फराबाद और पुंछ के मूल निवासियों के घर, व्यवसाय, उपजाऊ जमीनें और पवित्र धर्मस्थल छीन लिए गए–उन्हें केवल तन के कपड़ों के साथ बाहर खदेड़ दिया गया। मीरपुर की त्रासदी स्वतंत्र भारत के कूटनीतिक अभिलेखों में काले अक्षरों में दर्ज है।

मीरपुर के पतन के महज सात दिन बाद 2 दिसंबर, 1947 को–प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री लियाकत अली खान को एक अर्जेंट टेलीग्राम भेजा था। जो नेहरू अभिलेखागार में सुरक्षित है और भारत सरकार के 'जम्मू और कश्मीर पर श्वेत पत्र' में पुनः प्रकाशित हुआ। नेहरू ने कहा था 'मीरपुर शहर पूरी तरह से नष्ट हो चुका है।' उन्होंने दर्ज किया कि 13,000 गैर-मुस्लिमों में से केवल 2,000 ही किसी तरह जान बचाकर भारत पहुंच पाए थे। उन्होंने हजारों लापता शरणार्थियों और बड़ी संख्या में अपहृत हिंदू महिलाओं को लेकर गहरी चिंता जतायी थी।

सामूहिक अत्याचार के आधिकारिक रिकॉर्ड पर दर्ज होने के बावजूद विस्थापितों के प्रति उन्यासी वर्षों की निष्क्रियता और चुप्पी का आखिर क्या औचित्य है? आठ दशकों से संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक मानवाधिकार संस्थानों ने जम्मू-कश्मीर के क्षेत्रीय विवाद का हर पहलू से विश्लेषण किया है–लेकिन मीरपुर के हिंदू-सिख अल्पसंख्यकों के नस्लीय सफाए पर उन्होंने रहस्यमय चुप्पी साधे रखी। धार्मिक पहचान के आधार पर लोगों को निशाना बनाया गया था। ऐसे अपराध जिनकी संयुक्त राष्ट्र नरसंहार कन्वेंशन के तहत अंतर्राष्ट्रीय जांच होनी चाहिए थी। चुनिंदा मामलों में मानवाधिकारों की वकालत मानवीय गरिमा के साथ विश्वासघात है।

आज, 1947 की भयावहता को झेलने वाली लगभग पूरी पीढ़ी बिना न्याय देखे इस दुनिया से विदा हो चुकी है। उनके बच्चों और नाती-पोतों को न केवल निर्वासन का दर्द मिला, बल्कि एक संवेदनहीन नौकरशाही से भी लड़ना पड़ा। संसद में पेश आधिकारिक आंकड़े पीओजेके के 31,619 पंजीकृत



विस्थापित परिवारों को स्वीकार करते हैं–जिनमें 26,319 जम्मू-कश्मीर में और 5,300 अन्य राज्यों में फैले हुए हैं। इसके अलावा अनगिनत परिवार जान बचाने के डर से सीधे दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों में भाग गए। जो औपचारिक शिविर पंजीकरण से वंचित रह गए। पलायन के दौरान संयुक्त परिवार टूट गए, जिससे परिवारों की पूरी शाखाएं आधिकारिक सूचियों से बाहर हो गईं।

जब लोग जान बचाने हेतु जलते शहरों से भाग रहे थे, तब संपत्ति के कागजात और पंजीकरण पर्चियां साथ ले जाना असंभव था। आज किसी पीड़ित के वंशज को केवल इसलिए उसके जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित करना कि 1947 में उसके दादा-दादी के पास कागजात नहीं थे, नौकरशाही की क्रूरता है।

दूसरी ओर 1961 और 1967 के बीच, पाकिस्तान ने कब्जे वाले क्षेत्र के भीतर झेलम नदी पर मंगला बांध का निर्माण किया। जलाशय ने ऐतिहासिक शहर मीरपुर, आसपास के दर्जनों गांवों और पुश्तैनी कृषि भूमि के बड़े हिस्से को जलमग्न कर दिया। खदेड़े जा चुके परिवारों के पुश्तैनी घर, मोहल्ले, मंदिर और विरासत गहरे पानी के नीचे समा गए। केंद्र सरकार द्वारा 2016 में प्रति पात्र परिवार 5.5 लाख रुपये की एकमुश्त वित्तीय सहायता की मंजूरी एक विलंबित स्वीकृति थी–लेकिन सांकेतिक मुआवजा व्यापक पुनर्वास का विकल्प नहीं हो सकता। अनसुलझे भूमि अधिकार, गायब रिकॉर्ड, विभाजित परिवारों के दावे और जम्मू-कश्मीर से बाहर के परिवारों की उपेक्षा आज भी हजारों लोगों को अधर में लटकाए हुए है। आज तीसरी पीढ़ी के युवा नागरिक अपने ऐतिहासिक विस्थापन की किसी भी संरचनात्मक मान्यता के बिना विश्वविद्यालयों, व्यवसायों और सार्वजनिक जीवन में कदम रख रहे हैं। वे स्थायी और योग्य अधिकार मांग रहे हैं। पीड़ितों की मांग है कि केंद्र तुरंत एक अधिकार प्राप्त समिति गठित करे। राजनीतिक प्रतिनिधित्व बहाली के लिये, पीओजेके विस्थापितों के लिए विधानसभा की आठ सीटों को अनफ्रीज करने की 2014 की संसदीय स्थायी समिति की सिफारिश पर कार्रवाई करें। 2023 के संशोधन के तहत एक मनोनीत प्रतिनिधि केवल प्रतीकात्मक है। विस्थापितों को ठोस विधायी शक्ति की आवश्यकता है।

पीओजेके विस्थापित परिवारों के पात्र बच्चों और नाती-पोतों के लिए एक शैक्षिक ढांचा में देश भर के केंद्रीय वि.वि., आईआईटी ,एनआईटी ,मेडिकल कॉलेजों और प्रमुख संस्थानों में अतिरिक्त (सुपरन्यूमेरेरी) सीटें, छात्रवृत्ति और शुल्क रियायतें शामिल हों। केंद्रीय सरकारी सेवाओं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में पात्र वंशजों के लिए आयु-शुल्क में छूट सहित विशेष रोजगार-सहायता उपाय शुरू करें।दूसरी और तीसरी पीढ़ी के सदस्यों के लिए एक मानकीकृत, राष्ट्रीय स्तर पर मान्य 'पीओजेके विस्थापित परिवार वंशज प्रमाण पत्र' अनिवार्य करें। छूटे हुए परिवारों के लिए पंजीकरण फिर से खोलें जाएं। पिछली सूचियों से बाहर रह गए वास्तविक परिवारों और विभाजित शाखाओं के लिए एक विशेष, समयबद्ध सत्यापन अभियान शुरू करें। जिसमें खोई हुई 1947 की पर्चियों के स्थान पर ऐतिहासिक सरकारी पत्राचार, राजस्व रिकॉर्ड और विश्वसनीय पुष्टिकारक साक्ष्यों को स्वीकार किया जाए

माना एक मातृभूमि युद्धविराम रेखा के पार कट गई। मूल प्रत्यक्षदर्शी अब न रहे। पुराने मीरपुर की गलियां और मंदिर भले ही मंगला बांध के पानी के नीचे दबे हों। फिर भी, किसी समाज के इतिहास को डुबोया नहीं जा सकता, उसकी पहचान को कानून बनाकर मिटाया नहीं जा सकता, और उसके वंशजों के जायज दावों को दबाया नहीं जा सकता। मीरपुर के पतन के उन्यासी साल बाद तीसरी पीढ़ी उस मान्यता, गरिमा और न्याय की मांग करती है–जिससे उनके पूर्वजों को वंचित रखा गया था।

तय थी शादी, बंट चुके थे कार्ड पिता ने कराया मृत्यु भोज



माही की गूंज, रतलाम।

प्रेम विवाह से नाराज एक परिवार ने अपनी 23 वर्षीय बेटी को मृत मानते हुए घर पर शोक कार्यक्रम आयोजित कर दिया। बेटी की तस्वीर रखकर उस पर माला चढ़ाई गई। पंडित को बुलाकर हिंदू रीति-रिवाज से पूजा-पाठ किया गया। इसके बाद रिश्तेदारों और समाजजनों के लिए भोज भी रखा गया। परिवार का कहना है कि बेटी ने उनकी इच्छा के विरुद्ध शादी कर उन्हें गहरा आघात पहुंचाया है।

मामला जावरा के कुम्हारीपुरा का है। यहां रहने वाले एक परिवार की सबसे छोटी बेटी की शादी 3 दिसंबर को तय थी। घर में शादी की तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी थीं। रिश्तेदारों को निमंत्रण पत्र भी बांटे जा चुके थे। घर में भागवत कथा का आयोजन भी किया गया था। इसी बीच परिवार को जानकारी मिली कि बेटी ने रिंगनोद निवासी अपने प्रेमी के साथ उज्जैन जाकर विवाह कर लिया है।

होने वाले ससुराल में फोन कर दी शादी की जानकारी

परिवार के अनुसार, बेटी ने खुद अपने होने वाले ससुराल में फोन कर दूसरी शादी करने की जानकारी दी। इसके बाद यह बात उसके मायके वालों तक पहुंची। परिवार ने पुलिस को भी सूचना दी। युवती थाने पर पेश हुई। हालांकि, बेटी के इस फैसले से आहत पिता और अन्य स्वजन ने उससे संबंध तोड़ने जैसा कदम उठाते हुए उसे मृत मानकर सोमवार सुबह घर पर गोरनी (शोक) कार्यक्रम कर दिया।

पिता बोले- बेटी को पढ़ाया-लिखाया, लेकिन उसने हमारा दर्द नहीं समझा

युवती के पिता मटके का ठेला लगाते हैं। उनके चार बच्चे हैं। सबसे बड़ी बेटी, उसके बाद एक बेटा और फिर दो बेटियां हैं। पिता ने बताया कि छोटी बेटी की शादी 3 दिसंबर को जावरा में ही तय की थी। परिवार ने अपनी हैसियत के अनुसार पूरी तैयारी की थी। निमंत्रण पत्र भी बांट दिए थे।

तीन-चार दिन पहले बेटी के उज्जैन जाकर रिंगनोद के युवक से शादी करने की जानकारी मिली। बेटी ने खुद उन्हें इसकी जानकारी नहीं दी, बल्कि होने वाले ससुराल में फोन कर बताया था। पिता का कहना है कि उन्होंने बेटी को कॉलेज तक पढ़ाया-लिखाया, लेकिन उसने परिवार की भावनाओं का ध्यान नहीं रखा। इसी पीड़ा के चलते उसे मृत मानकर शोक कार्यक्रम किया।

शादी का झांसा देकर 16 वर्षीय नाबालिग से दुष्कर्म

माही की गूंज, रतलाम।



शादी का झांसा देकर 16 वर्षीय नाबालिग से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। नाबालिग के गर्भवती होने के बाद आरोपित युवक ही उसे प्रसव के लिए जिला अस्पताल के मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य केंद्र (एमसीएच) लेकर पहुंचा। यहां नाबालिग ने बच्ची को जन्म दिया। अस्पताल से सूचना मिलने पर महिला थाना पुलिस पहुंची और पीड़िता के बयान दर्ज किए। इसके आधार पर पुलिस ने आरोपित के विरुद्ध दुष्कर्म और पॉक्सो एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया है।

मामला डीडीनगर थाना क्षेत्र का है। सोमवार शाम नाबालिग के पेट में तेज दर्द होने पर अजय निनामा उसे प्रसव के लिए एमसीएच लेकर पहुंचा था। अस्पताल से सूचना मिलने पर महिला थाना प्रभारी रेखा चौधरी पुलिस टीम के साथ पहुंचीं और पीड़िता के बयान दर्ज किए।

नाबालिग ने पुलिस को बताया कि उसका अजय निनामा पिता शांतिलाल निनामा से प्रेम प्रसंग था। आरोपित उसे मिलने के लिए अपने घर बुलाता था। इसी साल फरवरी में उसने शादी का झांसा देकर अपने घर में उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए।

गर्भवती होने पर भी परिवार को नहीं बताई बात

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि घटना के दो-तीन महीने बाद उसे गर्भवती होने का पता चला था। आरोपित ने उससे शादी करने का भरोसा दिया था। इसी कारण उसने गर्भवती होने की बात स्वजन को नहीं बताई। सोमवार को पेट में तेज दर्द होने पर आरोपित उसे अस्पताल लेकर पहुंचा, जहां उसने बच्ची को जन्म दिया।

स्कूल के रिकॉर्ड से की उम्र की पुष्टि, आरोपित की तलाश जारी

पुलिस ने नाबालिग की उम्र की पुष्टि के लिए उसके स्कूल से जन्मतिथि का रिकॉर्ड लिया। इसमें जन्मतिथि 10 जनवरी 2010 दर्ज मिली। इसके बाद महिला थाना पुलिस ने अजय निनामा के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 64(1) और पॉक्सो एक्ट की धारा 5(एल)(द्वद्व)/6 के तहत शून्य पर प्रकरण दर्ज किया। मामला आगे की जांच के लिए डीडीनगर थाने भेजा गया है। डीडीनगर थाना पुलिस आरोपित की तलाश कर रही है।

70 रुपए के लिए चली गई प्रदीप की जान

माही की गूंज, शुजालपुर।

टोल मैनेजर की मौत को लेकर सड़क पर विरोध देखने को मिला। शुजालपुर-अकोदिया मार्ग स्थित टोल प्लाजा पर शुल्क को लेकर हुए विवाद में पिकअप की टक्कर से 26 वर्षीय मैनेजर प्रदीप मीणा की मौत के बाद टोल कर्मचारियों में आक्रोश फैल गया। आरोपी की गिरफ्तारी की मांग को लेकर कर्मचारियों ने हाईवे पर चक्काजाम कर प्रदर्शन किया। टोल के पास विरोध बढ़ता देख एसडीओपी और तहसीलदार मौके पर पहुंचे। पुलिस ने चक्काजाम कर रहे टोल कर्मियों को आश्वासन देने की कोशिश कर रहे है।चक्काजाम के कारण रास्ते पर जाम लगना शुरू हो गया है। बताया जा रहा है कि मृतक प्रदीप की एक साल पहले ही शादी हुई थी।

टोल शुल्क को लेकर हुआ था विवाद

जानकारी के अनुसार सोमवार शाम करीब 6:45 बजे खाली लोडिंग पिकअप टोल प्लाजा पहुंची थी। व्यावसायिक वाहन होने के कारण कर्मचारियों ने चालक से 70 रुपए टोल शुल्क मांगा। इसी बात पर विवाद होने के दौरान चालक ने पिकअप आगे बढ़ाते हुए मैनेजर प्रदीप मीणा को टक्कर मार दी। सिर में गंभीर चोट लगने से उनकी मौत हो गई। घटना के बाद चालक वाहन सहित फरार हो गया। घायल प्रदीप को शुजालपुर के सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।



पुलिस ने वाहन मालिक को किया राउंडअप

प्रत्यक्षदर्शी टोलकर्मी कृष्णा मिश्रा के अनुसार शुल्क मांगने पर चालक ने पिकअप आगे बढ़ाकर प्रदीप को टक्कर मार दी थी। बताया जा रहा है कि घटना में प्रयुक्त पिकअप सारंगपुर निवासी व्यक्ति की है। पुलिस ने वाहन मालिक को राउंडअप कर लिया है। हालांकि, इस संबंध में पुलिस की ओर से आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। मामले में अकोदिया पुलिस जांच कर रही है। टोल कर्मचारियों ने आरोपी की गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन किया।

2025 में हुई थी शादी, कमाने वाला घर में अकेला था प्रदीप

मिली जानकारी के अनुसार, मृतक प्रदीप मीणा (26) की शादी एक साल पहले साल 2025 में हुई थी। वह अपने घर में कमाने वाला एकलौता व्यक्ति था। परिवार के खर्च की जिम्मेदारी प्रदीप पर ही थी। अब उसके चले जाने के बाद परिवार पर आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ सकता है। इसी को देखते हुए प्रदर्शनकारियों ने प्रदीप के परिवार को मुआवजा राशि देने की गुहार लगाई है। उनकी मांग की कंपनी की तरफ से मृतक के घर वालों को 50 लाख तक का मुआवजा दिया जाए। उन्होंने यह भी मांग की कि जब तक आरोपी वाहन चालक, वाहन मालिक को गिरफ्तार नहीं किया जाता, तब तक चक्काजाम जारी रहेगा।

सवा माह के बच्चे के गले में फंसी सेफ्टी पिन

माही की गूंज, शाजापुर।

जिले के सारंगपुर से अपने सवा माह के मासूम बच्चे को गंभीर हालत में लेकर शाजापुर जिला अस्पताल पहुंचे माता-पिता की सांसें उस समय थम गईं, जब उन्हें पता चला कि बच्चे के गले में सेफ्टी पिन फंसी हुई है। गले में पिन फंसने से मासूम को काफी परेशानी हो रही थी। जिला अस्पताल में चिकित्सक डॉ. तेजपालसिंह जादौन ने तत्परता दिखाते हुए लेरिंगोस्कोप तकनीक की मदद से महज 15 से 20 मिनट की मशक्कत के बाद पिन को सुरक्षित बाहर निकाल दिया। समय रहते उपचार मिलने से बच्चे की जान बच गई। फिलहाल एहतियात के तौर पर उसे आईसीयू में रखा गया है, जहां उसकी हालत स्वस्थ बताई जा रही है।

गले में टांसिल के पास फंसी थी सेफ्टी पिन

परिजनों के अनुसार, बच्चे के गले में गोप पहनाई गई थी, जिसमें सेफ्टी पिन लगी हुई थी। इसी दौरान गोप बच्चे के मुंह में चली गई और सेफ्टी पिन खुलकर गले तक पहुंच गई। पिन बच्चे के टांसिल के पास फंस गई, जिससे उसकी हालत बिगड़ने लगी। घबराए परिजन बच्चे को लेकर तत्काल शाजापुर जिला अस्पताल पहुंचे और डॉ. जादौन को उसकी स्थिति बताई। मामले की गंभीरता को देखते हुए डॉ. जादौन ने बिना देर किए दूरबीन की मदद से बच्चे के गले की जांच की। जांच में सेफ्टी पिन टांसिल के पास फंसी दिखाई दी। इसके बाद लेरिंगोस्कोप की सहायता से प्रक्रिया शुरू की गई और करीब 15 से 20 मिनट की मशक्कत के बाद पिन को बाहर निकाल लिया गया। पिन निकलते ही बच्चे को राहत मिली और परिजनों ने भी चैन की सांस ली।

जरा सी लापरवाही बन सकती थी जानलेवा

डॉ. जादौन ने बताया कि यदि समय रहते बच्चे का उपचार नहीं मिलता और पिन अधिक समय तक गले में फंसी रहती तो स्थिति जानलेवा हो सकती थी। फिलहाल बच्चे को निगरानी के लिए आईसीयू में रखा गया है और उसकी हालत ठीक है। घटना ने एक बार फिर छोटे बच्चों के कपड़ों और उनके आसपास रखी जाने वाली नुकीली वस्तुओं को लेकर सावधानी बरतने की जरूरत को सामने ला दिया है।



कार से 3.60 क्विंटल डोडाचूरा जब्त



माही की गूंज, जावरा।

मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत मध्यप्रदेश के जावरा में बड़ी कार्रवाई की गई है। यहां पर औद्योगिक क्षेत्र थाना पुलिस ने एक कार से 3 क्विंटल 60 किलोग्राम अवैध डोडाचूरा जब्त किया है। तस्करी में इस्तेमाल की जा रही मारुति सुजुकी ईको कार को भी पुलिस ने जब्त कर लिया है। कार्रवाई में पुलिस ने कुल 15 लाख 20 हजार रुपए का मश्रुका बरामद कर मंदसौर जिले के एक 24 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के अनुसार, थाना औद्योगिक क्षेत्र जावरा के थाना प्रभारी निरीक्षक सुमित मिश्रा के नेतृत्व में हुसैन टेकरी चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक रघुवीर जोशी ने पुलिस टीम के साथ कार्रवाई की। पुलिस टीम को उज्जैन बायपास स्थित हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के सामने संदिग्ध गतिविधियों की सूचना मिली थी। इसके बाद टीम ने मौके पर पहुंचकर एनडीपीएस एक्ट के प्रावधानों का पालन करते हुए मारुति सुजुकी ईको कार क्रमांक एमपी 04 सीवाई 2693 की तलाशी ली।

7 लाख तक हो सकती कीमत

तलाशी के दौरान कार में रखे काले रंग के 18 प्लास्टिक कट्टों में अवैध डोडाचूरा भरा मिला। इसका कुल वजन 3 क्विंटल 60 किलोग्राम पाया गया। पुलिस ने मादक पदार्थ की कीमत 7 लाख 20 हजार रुपए आंकी है, जबकि तस्करी में इस्तेमाल कार की कीमत 8 लाख रुपए बताई गई है।

तस्करी के नेटवर्क की तलाश

पुलिस अब गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ कर रही है। जांच का मुख्य बिंदु यह पता लगाना है कि डोडाचूरा मौके से पुलिस ने जुझार पिता भेरूलाल खराड़ी (24), निवासी ग्राम पिपलखेड़ी, थाना भावगढ़, जिला मंदसौर को गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ थाना औद्योगिक क्षेत्र जावरा में अपराध क्रमांक 628/24.11.2026 के तहत एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/15 में प्रकरण दर्ज कर विवेचना शुरू की गई है।

इनकी रही सराहनीय भूमिका

कार्रवाई में निरीक्षक सुमित मिश्रा, उपनिरीक्षक रघुवीर जोशी, सहायक उपनिरीक्षक छगनलाल हाड़ा, प्रधान आरक्षक वीरेंद्रसिंह, बद्रीलाल चौधरी, सोहन भवेल तथा आरक्षक योगेंद्र, गोविंद पंवार, चेतन राठौर, शादाब बेग और योगेश राठौर की भूमिका रही। कहां से लाया गया था और इसकी आपूर्ति कहां की जानी थी। पुलिस मादक पदार्थ के स्रोत और तस्करी से जुड़े अन्य लोगों की जानकारी जुटा रही है।

यूनियन ने दी चेतावनी



माही की गूंज, रतलाम। कृषि उपज मंडी में प्याज आदि के कट्टों की चोरी की घटनाओं और हम्मालों पर माल की भरपाई की जिम्मेदारी डालने को लेकर युवा एकता हम्माल श्रमिक यूनियन ने मंडी प्रशासन के सामने आपत्ति दर्ज कराई है। यूनियन ने चेतावनी देते हुए कहा कि रतलाम मंडी में चोरी रोकने की जिम्मेदारी हम्मालों पर न डालें, सुरक्षा की जवाबदेही मंडी प्रशासन की हैं।

यूनियन ने पुलिस गश्त और सीसीटीवी दुरुस्त कराने की मांग करते हुए चोरी की घटनाओं को लेकर मंडी सचिव केके नरगावे को सौंपे मांग पत्र में स्पष्ट कहा कि हम्मालों और जमादारों की जिम्मेदारी उनके निर्धारित कार्य तक ही सीमित रखी जाए। बिना जांच और प्रमाण के चोरी हुए माल की भरपाई का भार उन पर नहीं डाला जाए।

सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था भी की जाए

यूनियन ने मांग की कि मंडी परिसर में दिन और रात दोनों समय पुलिस गश्त बढ़ाई जाए। बाहरी व्यक्तियों के प्रवेश और संदिग्ध गतिविधियों पर निगरानी रखी जाए। मंडी में लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच कर उन्हें चालू हालत में रखा जाए, ताकि चोरी करने वालों की पहचान हो सके। साथ ही सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था भी की जाए। काम समाप्त होने के बाद परिसर में रखे माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी मंडी प्रशासन की हो। हम्मालों को धमकी, मारपीट या जान-माल का खतरा होने पर तत्काल सुरक्षा और पुलिस सहायता उपलब्ध कराई जाए।

काम प्रभावित होने की जिम्मेदारी प्रशासन की

यूनियन ने चेतावनी दी कि मांगों का निराकरण नहीं होने पर आंदोलन किया जाएगा। ऐसी स्थिति में मंडी का काम प्रभावित होने की जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। यूनियन ने कहा कि वह व्यापारियों के विरोध में नहीं, बल्कि हम्मालों के सम्मान और सुरक्षा के लिए आवाज उठा रही है। इस मौके पर अध्यक्ष मुबारिक खां, सचिव सेफुल्लाह शाह, संरक्षक सुरेंद्रसिंह भाटी, राजेंद्र परमार, शाहीद, सतीश वर्मा, अल्लाह रखा, गुलाम हुसैन आदि बड़ी संख्या यूनियन के सदस्य मौजूद थे।

पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा स्थगित



भोपाल।

मध्य प्रदेश में 7500 पुलिस कांस्टेबल पदों के लिए होने वाली भर्ती परीक्षा स्थगित किए जाने के बाद सियासत तेज हो गई है कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) ने भाजपा सरकार पर युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने का आरोप लगाया है। विपक्ष ने सरकार से परीक्षा की नई तारीख जल्द घोषित करने और भर्ती प्रक्रिया पूरी करने की मांग की है।

मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल ने रविवार देर रात नोटिफिकेशन जारी कर 19 से 22 नवंबर के बीच प्रस्तावित परीक्षाओं को स्थगित करने की जानकारी दी थी। इस भर्ती के लिए करीब 7.54 लाख अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है।

उमंग सिंघार बोले- युवाओं के भविष्य के साथ मजाक

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने परीक्षा स्थगित होने पर भाजपा सरकार की आलोचना की। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करते हुए उन्होंने कहा कि महीनों से तैयारी कर रहे लाखों उम्मीदवार परीक्षा का इंतजार कर रहे थे, लेकिन सरकार समय पर परीक्षा कराने में विफल रही।

सिंघार ने कहा कि कुछ युवा दिन-रात पढ़ाई कर रहे हैं, कुछ नौकरी की उम्मीद लगाए बैठे हैं और कई अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं। उनके मुताबिक, भाजपा सरकार को युवाओं की चिंता नहीं है और वह केवल विज्ञापनों पर ध्यान दे रही है।

कांस्टेबल पद के लिए 42 पीएचडी धारकों ने किया आवेदन

सिंघार ने बेरोजगारी का मुद्दा उठाते हुए भर्ती के आंकड़ों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि जिस कांस्टेबल पद के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 12वीं पास थी, उसके लिए 42 पीएचडी धारकों, 12 हजार इंजीनियरों, 51 हजार पोस्ट ग्रेजुएट और 3.25 लाख ग्रेजुएट उम्मीदवारों ने आवेदन किया था। उन्होंने मोहन यादव सरकार से युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ बंद करने और तत्काल परीक्षा की नई तारीख घोषित करने की मांग की।

सीपीआई(एम) ने भी सरकार से मांगा जवाब

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) के राज्य सचिव जसविंदर सिंह ने भी परीक्षा स्थगित किए जाने पर नाराजगी जताई। उन्होंने बयान जारी कर कहा कि 7,500 कांस्टेबल पदों की भर्ती परीक्षा अचानक टलने से 7.54 लाख उम्मीदवार प्रभावित हुए हैं। जसविंदर सिंह के मुताबिक, उम्मीदवारों ने कोचिंग पर हजारों रुपये खर्च किए और महीनों तक तैयारी की थी। ऐसे में बिना किसी ठोस कारण के परीक्षा स्थगित करना युवाओं के साथ अन्याय है।

उन्होंने कहा कि परीक्षा आयोजित करने में सरकार की अक्षमता का खामियाजा प्रदेश के युवाओं को भुगतना पड़ रहा है। सीपीआई(एम) ने भी सरकार से बिना देरी किए परीक्षा की नई तारीख घोषित करने की मांग की है।

नई तारीख घोषित करने की मांग

परीक्षा स्थगित होने के बाद विपक्षी दलों ने सरकार और कर्मचारी चयन मंडल से स्थिति स्पष्ट करने को कहा है। कांग्रेस और सीपीआई(एम) का कहना है कि भर्ती परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों ने लंबे समय से तैयारी की है। इसलिए परीक्षा की नई तारीख जल्द घोषित कर भर्ती प्रक्रिया पूरी की जानी चाहिए।

नोट- परीक्षा स्थगित करने के कारण और नई तारीख को लेकर कर्मचारी चयन मंडल की ओर से जारी आधिकारिक सूचना को अभ्यर्थियों के लिए अहम माना जा रहा है।

आरटीई में हेराफेरी मामला : स्कूल छोड़ने के बाद भी छात्रा को आधार अपडेट के नाम पर स्कूल प्रशासन ले जाता था

पुरानी फीस बकाया होने का हवाला, पिता का आरोप स्कूल छोड़ने के बाद भी वसूला पैसा

माही की गूंज, पेटलावद।

आरटीई (शिक्षा का अधिकार योजना) में हेराफेरी के मामले होने की जानकारी सामने आती रही है लेकिन इस संबंध में कोई शिकायत ओर प्रमाण सामने नहीं आया। एडमिशन से लेकर फीस भुगतान तक पूरी प्रक्रिया ऑन लाइन होने से इसमें हेराफेरी होने के अवसर बहुत कम है। लेकिन निजी स्कूल प्रशासन ओर स्थानीय अधिकारियों की साठगांठ से इसमें हेराफेरी संभव है। पेटलावद विकास खंड के बोलासा निवासी संजय पाटीदार के साथ हुए एक मामले से हेराफेरी का संदेह हुआ ओर पड़ताल करने पर पता चला कि, योजना के नाम पर हेराफेरी की गई ओर उसमें उनकी बेटी का उपयोग किया गया। लागतार शिकायत के बाद भी मामले में कोई निराकरण नहीं होने से तुल पकड़ लिया ओर मामला मीडिया में आने के बाद अब सही जांच की उम्मीद बंधी है।

गूंज के पिछले अंक में पूरे मामले को लेकर खबर प्रकाशित की गई जिसके बाद विभाग में हलचल है। विभाग की ओर से दो लोग शिकायतकर्ता के घर भी पहुंचे लेकिन शिकायतकर्ता से मुलाकात नहीं होने से वापस लौट गए। शिकायतकर्ता पर शिकायत वापस लेने के लिए दबाव बनाने की बात पहले ही सामने आ चुकी है। बीआरसी रेखा गिरी वर्तमान स्कूल जहा शिकायतकर्ता की बालिका अध्यनरत है उस संस्था पर दबाव बनाकर शिकायत बंद करने का प्रयास कर चुकी है।

स्कूल छोड़ने के बाद भी आधार अपडेट के लिए ले गए स्कूल वाले

मामले में गम्भीर आरोप छात्रा के पिता ने लगाए हैं कि, न्यू इनोवेटिव एकेडमी बोलासा में संजय पाटीदार की पुत्री का एडमिशन आरटीई योजना के तहत हुआ था तीन वर्ष के बाद शिक्षा स्तर को कारण बताकर अन्य स्कूल में भर्ती किया ओर आरटीई योजना के तहत मिलने वाले लाभ को भी शपथ पत्र देकर छोड़ दिया। स्कूल छोड़ने के बाद भी न्यू इनोवेटिव एकेडमी बोलासा के जिम्मेदार, छात्रा को पुराने सत्र की स्कूल फीस बकाया होने के नाम पर आधार अपडेट के लिए रायपुरिया ले जाते रहे ओर जब भी ओटीपी मांगा छात्रा के पिता ने स्कूल वालो को दिया। नई स्कूल में जब छात्रा की अपर आईडी अपडेट करने के दौरान छात्रा का नाम पुरानी स्कूल के रिकॉड में आरटीई योजना के अंतर्गत दर्ज बताया गया जिसके बाद मामला उजागर



हुआ। शिकायतकर्ता को पूरी आशंका है कि स्कूल प्रशासन ने अधिकारीयो के साथ मिली भगत कर उनकी छात्रा के नाम पर तीन नए सत्र के फीस भुगतान प्राप्त किया है । संजय पाटीदार ने इस संबंध में शिकायत कर गलत तरीके से फीस वसूलने वाले जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई और स्कूल फीस सरकारी खाते में जमा करने की मांग की है। फिलहाल पूरे मामले को जांच के नाम पर गोलमोल घुमाया जा रहा है।

प्रक्रिया ऑन लाइन, अगर फीस वसूली तो हो कार्रवाई

मामले में अधिकारीयो की जांच और मंशा जांच के घेरे में है पूरी प्रक्रिया ऑन लाइन है। अगर स्कूल छोड़ने के बाद भी छात्रा के नाम पर योजना की राशि स्कूल को भुगतान की गई है तो ये सब आन लाईन है। स्कूल को कब-कब कितनी फीस का भुगतान किया गया इसका स्टेटमेंट निकाल कर शिकायतकर्ता को दिखा कर संतुष्ट किया जा रहा है। जबकि स्थानीय अधिकारी बीआरसी रेखा गिरी मौखिक रूप से बता रही है कि, स्कूल छोड़ने के बाद छात्रा का नाम स्कूल से कट गया था और फीस भुगतान भी नहीं किया गया। सब कुछ साफ होने के बाद भी मामले को घुमाया जा रहा है। जांच में शिकायत का जवाब बना कर शिकायत बंद की जा रही है। शिकायत के निराकरण के साथ आफ द रिकॉड ये भी नहीं बताया जा रहा है कि कौन से सत्र की फीस स्कूल के किस खाते में किस-किस छात्र-छात्रा की जमा हुई। जो संदेह पैदा करता है कि कही न कही मामला सरकारी योजना की राशि में बडी हेरा-फेरी का है ओर जांच का दायरा बढ़ने पर और भी इस प्रकार के मामले उजागर हो सकते है।

कलेक्टर साहब कुछ तो नया करे

जिले के कलेक्टर डा योगेश तुकाराम भरसट के सामने ये मामला दो बार पहुंच चुका है, लेकिन हर बार की तरह शिकायत को संबंधित विभाग के अधिकारियों की ओर फॉरवर्ड कर इतिश्री कर ली जाती है। शिकायतकर्ता ने साफ कहा है कि, अगर उनकी बेटी के नाम पर राशि का आहरण किया गया तो वो सरकारी खाते में जमा हो और हेराफेरी करने वालो पर कार्रवाई हो। ऐसे में कलेक्टर साहब से भी उम्मीद की जाती है कि, शासन हित में शिकायत का निराकरण स्वयं के स्तर पर जांच कर करे।

निर्माण कार्य के चलते बड़ी दुर्घटना, धोबी घाट के पास पलटी कांक्रीट मिक्सर मशीन, चालक घायल



माही की गूंज, करवड़।

करवड़-गंगाखेड़ी के बीच धोबी घाट के पास कांक्रीट मिक्सर मशीन बेकाबू होकर पलट गई। इस हादसे में मशीन का चालक घायल हो गया। घटना के बाद मार्ग पर दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और आवागमन बाधित हो गया।

जानकारी के अनुसार, दुर्घटनाग्रस्त कांक्रीट मिक्सर मशीन उस ठेकेदार की बताई जा रही है, जो क्षेत्र में निर्माणाधीन सड़क का कार्य कर रहा है। वाहन के अनियंत्रित होकर पलटने से चालक घायल हो गया और मौके पर ही पड़ा रहा। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को संभालने में जुट गई। मार्ग निर्माण के दौरान लगातार दुर्घटनाओं में इजाफा हुआ है और कई लोगों की जान तक जा चुकी है। इधर, वाहन पलटने के कारण करवड़-रतलाम मार्ग पर यातायात पूरी तरह ठप हो गया। सड़क के दोनों ओर गाड़ियों की लंबी कतारें लग जाने से यात्रियों और चालकों को परेशानी उठानी पड़ी।

पुलिस की मदद से छोटे वाहनों को गंगाखेड़ी के रास्ते से निकाला गया, जबकि बड़े और भारी वाहन मार्ग पर ही खड़े रहे।

रुक-रुक कर किया जा रहा है कार्य

स्थानीय लोगों का कहना है कि निर्माणाधीन सड़क पर आए दिन हादसे हो रहे हैं। लोगों के मुताबिक, पिछले करीब दो महीनों से सड़क निर्माण का काम बंद पड़ा है, लेकिन संबंधित अधिकारियों ने न तो सड़क की हालत सुधारने पर ध्यान दिया और न ही सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किए। लगातार हो रही दुर्घटनाओं से क्षेत्रवासी परेशान हैं। लोगों ने मांग की है कि, सड़क निर्माण कार्य जल्द शुरू कराया जाए और हादसों को रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं, ताकि किसी बड़ी अनहोनी से बचा जा सके।

किसानों की बैठक : वंचित पंचायतों में माही नहर लाने व नर्मदा लिंक से जुड़ने की रखी मांग

माही की गूंज,सारंगी। संजय उपाध्याय

माही नहर और नर्मदा लिंक से वंचित रह गए पेटलावद विकासखंड की पंचायत के किसानो ने बैठक आयोजित की इस दौरान किसानो ने ग्राम पंचायत कालीघाटी के रुपापाडा मे बैठक रखी और बड़ी संख्या में किसान सम्मिलीत हुए। बैठक मे ग्राम पंचायत देवली, बेकल्दा, हमीरगढ, पांचपिपला,बडासलुनिया, कालीघाटी, सामली, कचराखदान पंचायत के किसानो ने माही नहर लाने की मांग के संबंध मे चर्चा की वही किसान नर्मदा माईक्रो लिंक परियोजना ?से जुडने की मांग कर रहे हैं। इन पंचायत के किसानो के पास खेती करने के लिए सिंचाई की कोई उचित व्यवस्था नही होने के चलते किसान माही परियोजना या नर्मदा लिंक से जुडने की मांग कर रहे है।



किसानो का कहना है कि, पंचायतो मे पहाडी क्षेत्र होने के चलते पानी का वाटर लेवल भी नही हैं। इस वर्ष कम वर्षा से होल या कुंए भी सिंचाई के समय दम तोड चुके है। किसान बताते है कि, परियोजना की नहर कई गांवो से दो किमी नजदीक से गुजरती है,तो कही इससे भी कम दुरी पर गुजर रही है लेकिन क्षेत्र के किसानो के खेत सुखे पडे है। माही के नजदीक हिस्सो मे पानी की कमी के चलते किसान खेती नही कर पा रहे है। कई किसान एक फसल लेकर खेत खाली छोड देते है। इस वर्ष सिंचाई की ज्यादा दिक्कत हो रही है वही कई किसान पानी की कमी के चलते वर्ष मे एक बार ही फसल ले पाते है। लिहाजा वे आर्थिक रुप से कमजोर हो रहे है। वही जिले की बडी परियोजना माही डेम से भी अंचल की उक्त पंचायतो के किसान वर्ग को कोई लाभ नही मिला है।

निशुल्क आयुर्वेदिक लेप सेवा शिविर

माही की गूंज ,पेटलावद।

पेटलावद की सामाजिक संस्था अरिहंत युवा वाहिनी के तत्वाधान में निशुल्क आयुर्वेदिक लेप सेवा शिविर का आयोजन किया जा रहा है। अरिहंत युवा वाहिनी के अध्यक्ष कमल चणोदिया व सचिव राहुल मुथा ने बताया कि शिविर में आयुर्वेदिक चिकित्सक जोधपुर के लक्ष्मीचंद जैन के द्वारा घुटनों का दर्द कमर दर्द व माइग्रेन का इलाज आयुर्वेदिक लेप के द्वारा किया जाएगा। डॉक्टर जैन के द्वारा पूरे देश में 35 कैंप किए गए हैं इन कैंप में लगभग 1लाख मरीजों को फायदा पहुंचा है। संस्था की ओर से अधिक से अधिक संख्या में शिविर का लाभ उठावे की अपील की है।

मीडिया प्रभारी प्रदीप झाडमता ने बताया कि शिविर का आयोजन स्थल मांगलिक भवन झंडा बाजार रखा गया है ।

सरकार की योजनाएं और ढीली कार्यप्रणाली का परिणाम, प्रदेश में बढ़ती पानी की परेशानी और प्रदुषण



रिकेश बैरागी

माही की गूंज, झाबुआ।

प्रशांत महासागर का तापमान बढ़ने से अल नीनो प्रभाव की वजह से आने वाले वर्ष भी ग्रीष्म लहर की प्रबल आशंका है, जिससे भारत का मानसून भी प्रभावित हो सकता है। इस वर्ष तो हाल बरसात के बहुत खराब ही रहे हैं, और शीत ऋतु का प्रभाव भी कम ही दिखाई दे रहा है। प्रदेश स्तर पर जल समस्या को लेकर बहुत से जिलो को सूखाग्रस्त घोषित किया जा चूका है, इसके साथ ही सरकार बारिश और बूवाई के रकबो के मापदंड के आधार पर जिलेवार आकलन करते हुए राहत और सहायता तय की जाएगी।

जल स्तर, पेयजल की पूर्ति के लिए सरकार तरह-तरह की योजनाओं की घोषणा कर रही है, नर्मदा नदी के जल को प्रदेश के विभिन्न जिलो तक पहुंचाने की तैयारियों में करोड़ो रुपयो की लागत के कार्य को शुरु करने की योजना बना चूकी है। परंतु इन योजनाओं पर कार्य इतना कम हुआ है कि, प्रदेश के बहुत से शहरो के कंठ सुखे रहने की आशंका दिखाई दे रही हैं। पानी की कमी को पूरा करने के लिए योजना बनती दिख रही है तो पानी को व्यर्थ बहाने पर रोक के लिए बड़े शहरों में कड़े नियम तैयार कर दिए है, जिनके उलंघन पर अर्थदंड भी प्रस्तावित है। परंतु सिर्फ इतना कर लेने से ही समस्या का समाधान सामने आ जाएगा...? नहीं बिल्कुल भी नहीं, समस्या के समाधान के लिए समस्या के जड़ मूल तक जाना होगा। सरकार को सोचना होगा कि, जिस देश में 271 नदियां है और वह मध्यप्रदेश जिसे नदियों का मायका भी कहा जाता है वहां जल स्तर की समस्या ने विकराल रुप ले लिया है वह भी तब जब देश में जल को देवता की मान्यता प्राप्त है, और नदिया भी यहां आराध्य हैं। प्रदेश हो या देश, शहर, गांव में जहां से भी नदी का प्रवाह है वहां वह नदी पुज्यनीय है। जल संकट की विपदा के समय विडम्बना यह है कि, देश-प्रदेश में जल संकट और जल प्रदूषण के बारे में विचार कर उन पर आई समस्या के समाधान की खोज की जा रही है, जिसमें सरकार नाकाम सी प्रतित हो रही है।

पिछले दो दशको से प्रबुद्धजनों द्वारा मीडिया के माध्यम से सरकार को जल संकट और जल प्रदूषण के बारे में आलेख, और समाचार के द्वारा सचेत किया जा रहा था किंतु सरकार अपनी प्रगति, विकास और भ्रम के नशे में मूल आवश्यकता को नजर अंदाज करती रही जिसका परिणाम वर्तमान में नागरिक जल समस्या और पेयजल की परेशानी उठा रहे हैं। प्रदेश के बहुत से जिले और उन जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को आज भी पेयजल के लिए दूर दराज जा कर पानी की आपूर्ति करनी पड़ती है।

जल प्रदूषण के मुख्य कारक और घटक सरकार के पास लिखित में है, फिर भी सरकार उन पर कार्य करने के बजाए सिर्फ बयानबाजी और योजनाओं के लालच में जनता को मोह में बांधे हुए है। नदियों को गंदा करने पर सरकार को रोक लगाना चाहिए, संभव हो तो जल प्रदूषण करने वालों को दंड का प्रावधान रखना चाहिए। जागरुकता फैलाना चाहिए कि, गांवों और शहरों में जल स्त्रोतों को दूषित नहीं किया जाए इसके लिए जल स्त्रोतो के किनारे, पुलिया पर जागरुकता के बैनर लगाना चाहिए। साथ ही इसके जल स्त्रोतो के किनारों पर पेड़ लगाने के लिए जनता को प्रेरित करना चाहिए और पेड़ को बड़ा करने की जिम्मेवारी भी अपने हाथ लेना चाहिए। हर कार्य में सरकार यदि जनता की गाढ़ी कमाई का उपयोग करेगी तो योजनाएं बन तो जाएगी परंतु धरातल पर पहुंचते समस्या को विकराल भी कर देगी। प्रदूषण फैलाने वाले अनेक क्रिया कलापो पर कठोर कार्रवाई करना चाहिए।



31वां विश्व जलवायु सम्मेलन तुर्किए के अंताल्या शहर में 9 नवम्बर से 22 नवम्बर तक आयोजित किया गया जिसमें परिचर्चा का केन्द्रीय विषय जल और महासागरो की ताप सहनशीलता रहा है, जो की भारत में जल प्रदूषण के संकट में सीधे तोर पर जुड़ा है। जल प्रदुषण के मामले में भारत 122 देशों की सूची में 120वे पायदान पर है। इसका सबसे प्रमुख स्त्रोत घरों और कारखानों का प्रदूषित जल है जो सीधे नदियों और भूजल में मिलता हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार भारत की 271 नदियों के शहरों और औद्योगिक केन्द्रों से गुजरने वाले 296 प्रवाह बूरी तरह से प्रदूषण के प्रभाव में प्रदूषित हो चुके हैं। जबकि सरकारों द्वारा नदियों का प्रदूषण कम करने के लिए बड़े-बड़े वादे किये जाते हैं जो कि इस तरह का प्रदूषण देखकर सरकार का हजारो करोड़ रुपया खर्च करना एक बेइमानी लगता है। यमुना का दिल्ली से 22 किलोमीटर लंबे प्रवाह को भारत के सबसे प्रदूषित नदि प्रवाह माना जाता है। ऐसे ही प्रदेश में बहने वाली जीवन रेखा नर्मदा नदी भी प्रदूषण से प्रभावित हो चुकी है, प्रदूषण बोर्ड ने ही नर्मदा के अनेक स्थानों से पानी का सेंपल लिया। प्रदुषण नियंत्रण मंडल के द्वारा जारी रिपोर्ट में 50 स्थानों में से 15 स्थानों पर नर्मदा नदी का पानी पीने योग्य नहीं होना प्रदेश के लिए घातक है। निश्चित ही नर्मदा नदी की स्वच्छता के सारे सरकारी अभियानों को इस रिपोर्ट से जोरदार झटका लगा है। क्योंकि पिछले एक वर्ष में नर्मदा नदी का प्रदुषण कम होने के बदले और अधिक बढ़ गया है, जो कि स्पष्ट रुप से दर्शाता है कि, नर्मदा नदी की स्वच्छता के लिए प्रदेश सरकार द्वारा लंबे चौड़े बजट की परियोजनाओ की प्रगति नगण्य है।

एनजीटी के निर्देशानुसार नर्मदा नदी में मिलने वाले सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाए जा रहे हैं। नर्मदा सेवा मिशन के अंतर्गत प्रदुषण नियंत्रण मंडल द्वारा लोगों को गंदगी नहीं करने के लिए जागरुक किया जा रहा है। बोर्ड द्वारा पालीथीन जब्ती की कार्रवाई की जाती है, और उद्योगों से निकलने वाले कचरे को नर्मदा में मिलने से रोका जा रहा है, फिर भी नर्मदा का जल दिन प्रतिदिन दुषित होता जा रहा है।

बहरहाल, प्रदेश के हर जिले में कोई न कोई छोटी-बड़ी नदी बहती ही है, उन नदियों में भी यहीं समस्या जड़ता से जमी हुई है। प्रत्येक नदी में शहर, नगर की सीवेज लाईन जा कर मिलती है और नदी के स्वच्छ जल को दुषित करती है। उद्योगो का गंदा केमिकल युक्त कचरा और दुषित पानी नदी के स्वच्छ जल को प्रदुषित कर रहा है। विकासशीलता के नाम पर नदी के प्रवाह को समाप्त किया जा रहा है।

योजना के अनुसार सरकार जिलों में बहने वाले हर छोटी नदी को एक दूसरे से जोड़ दे और उनमें होने वाले प्रदूषण पर रोक लगवा दे तो जल संकट की समस्या में बहुत अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

आबादी के बीच नाली व निकासी का अभाव, गंदगी और मच्छरों से परेशान ग्रामीण

लक्ष्मण सोलंकी के घर से भारत खेर के घर तक सीसी सड़क व नाली निर्माण की मांग, अतिक्रमण हटाने की भी उठी आवाज

माही की भामल।

थांदला जनपद पंचायत के अंतर्गत ग्राम पंचायत भामल के आबादी क्षेत्र में नाली एवं पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं होने से ग्रामीणों को गंदगी और मच्छरों की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। मोहल्ले के रहवासियों का कहना है कि, लंबे समय से इस समस्या के निराकरण की मांग की जा रही है, लेकिन अब तक स्थायी समाधान नहीं हो पाया है। ऐसे में ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत से शीघ्र आवश्यक कदम उठाने की मांग की है।

जानकारी के अनुसार, लक्ष्मण सोलंकी के घर से लेकर भारत खेर के घर तक सड़क और नाली की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण रहवासियों को आवागमन के साथ ही साफ-सफाई संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आसपास गंदगी जमा रहने और नाले के निकट मच्छरों का प्रकोप बढ़ने से मोहल्ले के लोग चिंतित हैं। महिलाओं का कहना है कि, क्षेत्र में कई लोग वायरल फीवर और बुखार से पीड़ित हैं। हालांकि, इन बीमारियों का कारण क्या है, इसकी पुष्टि स्वास्थ्य विभाग की जांच से ही हो सकती है।

पहले था रास्ता, अब अतिक्रमण की शिकायत

ग्रामीणों के अनुसार, पहले इस क्षेत्र में आवागमन के लिए बेहतर रास्ता उपलब्ध था, लेकिन आसपास के खेतों की ओर अतिक्रमण होने के कारण रास्ता प्रभावित हो गया है। ग्रामीणों का कहना है कि, यदि संबंधित विभाग मौके का निरीक्षण कर रास्ते की वास्तविक स्थिति का पता लगाए और नियमानुसार अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई करे, तो सड़क निर्माण का रास्ता साफ हो सकता है। इससे मोहल्ले में आवागमन सुगम होने के साथ जल निकासी की समस्या का भी स्थायी समाधान संभव है।

सीसी सड़क और नाली निर्माण की मांग

मोहल्ले की महिलाओं एवं ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत भामल से मांग की है कि, लक्ष्मण सोलंकी के घर से भारत खेर के घर तक आवश्यकतानुसार सीसी सड़क का निर्माण कराया जाए तथा दोनों ओर उचित नाली बनाकर पानी की निकासी की व्यवस्था की जाए। ग्रामीणों का मानना है कि, व्यवस्थित सड़क और नाली बनने से गंदगी जमा होने की समस्या आबादी क्षेत्र कम होगी तथा मच्छरों के प्रकोप पर नियंत्रण पाने में भी मदद मिलेगी।



राजस्व विभाग से भी जांच की अपेक्षा

ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत के साथ-साथ संबंधित पटवारी, राजस्व निरीक्षक एवं तहसीलदार से भी मामले की जांच कराने की मांग की है। उनका कहना है कि, संबंधित अधिकारी मौके पर पहुंचकर रास्ते की स्थिति का निरीक्षण करें और यदि शासकीय रास्ते पर अतिक्रमण पाया जाता है, तो नियमानुसार कार्रवाई की जाए। इसके बाद ग्राम पंचायत द्वारा सड़क एवं नाली निर्माण का कार्य प्राथमिकता से कराया जाए। ताकि मोहल्लेवासियों को लंबे समय से चली आ रही परेशानी से राहत मिल सके।

अब देखना यह है कि, ग्राम पंचायत भामल एवं संबंधित विभाग इस समस्या को कितनी गंभीरता से लेते हैं और रहवासियों को राहत दिलाने के लिए कब तक ठोस कदम उठाए जाते हैं।

नए काम की शुरुआत ही भ्रष्टाचार से , शिकायत के बाद विभाग ने कार्य रोका



माही की गूंज, बरवेट- जगदीश प्रजापत

लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्मित रायपुरिया-करवड़ 24 किलोमीटर मार्ग शुरुआत में ही भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहा है। विभाग को बिना सूचना के ठेकेदार ने घटिया निर्माण कार्य शुरू कर दिया है। ग्राम बरवेट और जामली के बीच एक पुलिया निर्माण का कार्य प्रारंभ किया जिसमे बालू रेत की जगह चूरी (डस्ट) मिलाकर निर्माण कार्य किया जा रहा है। जिसकी सूचना मिलते ही पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर काम रुकवा दिया है। इधर ग्रामीणों का कहना है को शुरुआत में ही सड़क निर्माण भ्रष्टाचार की भेट चड रहा है, तो अभी पूरा काम बाकी है। उल्लेखनीय है की रायपुरिया बरवेट करवड़ 24 किलोमीटर मार्ग का निर्माण लगभग 55 करोड़ की लागत से लोक निर्माण विभाग द्वारा किए जा रहा है। ठेकेदार द्वारा संबंधित विभाग या स्थानीय प्रशासन को पूर्व सूचना दिए बिना सड़क मार्ग पर पुलिया का निर्माण शुरू किया गया था। जिसकी सूचना मिलते ही विभाग के अधिकारियों ने काम को रुकवा दिया है।

घटिया सामग्री का उपयोग

रायपुरिया करवड 24 किलोमीटर के निर्माण कार्य में मानक के अनुसार रेत (बालू) के स्थान पर पत्थर की चूरी (डस्ट) का उपयोग किया जा रहा था, जिससे पुलिया की मजबूती पर गंभीर सवाल खड़े किए जा रहे है। निर्माण कार्य शुरू होने पर वहा पर विभाग का कोई इंजीनियर या अधिकारी उपस्थित नही था।

रोशन परमार सीनियर इंजीनियर पीडब्ल्यूडी विभाग ने बताया कि ठेकेदार द्वारा बिना सूचना के पुलिया निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया गया था। सूचना मिलते ही विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे और निरीक्षण किया जिसमे अनियमितता पाई और तत्काल प्रभाव से काम रुकवा दिया।

शराब दुकानों के बाहर हो रहा शराबियों का हेल्थ चेकअप

सागर।

मध्य प्रदेश के सागर में जहरीली शराब से हुई मौतों के बाद अब जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क नजर आ रहा है। शराब से होने वाले खतरों को रोकने के लिए प्रशासन ने एक नई पहल शुरू की है। इसके तहत शराब दुकानों के ठीक सामने टीमें तैनात की गई हैं, जो शराब पीने वालों का मौके पर ही हेल्थ टेस्ट और काउंसलिंग कर रही हैं।



सागर कलेक्टर दिलीप कुमार यादव के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग और आबकारी विभाग की संयुक्त टीम ने मोर्चा संभाला है। इस अभियान के अंतर्गत सागर शहर के साथ-साथ देवरी, रहली, बीना और खुरई में वाइन शॉप के बाहर स्पेशल शिविर लगाए गए।

इन केंद्रों पर कुल 97 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। जांच के दौरान लोगों को ज्यादा शराब पीने से शरीर पर पड़ने वाले गंभीर नुकसान के बारे में विस्तार से समझाया गया और उन्हें जरूरी मेडिकल एडवाइस भी दी गई।

शराब पीने वालों को जागरुक करने की मुहिम

जिला प्रशासन का कहना है कि इस विशेष अभियान का मकसद ज्यादा शराब पीने वाले लोगों को जागरूक करना है। इसके जरिए उनकी मौजूदा स्वास्थ्य स्थिति का सही आकलन किया जा रहा है, ताकि किसी भी तरह की शारीरिक समस्या सामने आने पर उन्हें समय रहते सही इलाज मुहैया कराया जा सके। प्रशासन ने बताया है कि लोगों की जान बचाने के लिए स्वास्थ्य और आबकारी विभाग की ये संयुक्त मुहिम आगे भी लगातार जारी रहेगी।

जहरीली शराब कांड के बाद बढ़ी सख्ती

बता दें कि बीते कुछ महीनों के दौरान सागर जिले में जहरीली शराब पीने से दर्जनों लोगों की जान जा चुकी है। इन घटनाओं के बाद से ही स्थानीय स्तर पर काफी आक्रोश था। मामले की गंभीरता को देखते हुए शासन स्तर पर भी कड़ा रुख अपनाया गया और जिले के कई वरिष्ठ अधिकारियों पर कार्रवाई की गाज गिरी थी। प्रशासन की इस ताजा कवायद को भविष्य में ऐसी किसी भी घटना को रोकने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।

शताब्दी समारोह में गायत्री उपवन की प्रसंशा



माही की गूंज ,पेटलावद।

गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं माता भगवती देवी शर्मा जी के पावन विचारों को जन-जन तक पहुँचाने तथा उनके शताब्दी वर्ष 2026 के ऐतिहासिक आयोजन के अंतर्गत अखिल विश्व गायत्री परिवार, पेटलावद के समर्पित परिजनों डॉ. चिन्मय भैया से शिष्टाचार भेंट कर आत्मीय संवाद किया। इस अवसर पर पेटलावद के गायत्री परिजनों ने गुरुदेव द्वारा संचालित सप्त आंदोलनों में से एक महत्वपूर्ण आंदोलन पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के अंतर्गत संचालित वृक्ष गंगा अभियान की प्रेरणा से पेटलावद में किए जा रहे प्रयासों की विस्तृत जानकारी साझा की और गायत्री उपवन की पूरी कार्ययोजना से अवगत कराया कि, किस प्रकार परिजनों ने पूरे क्षेत्र में 125 से अधिक सामाजिक संगठनों को जागरूक किया और पौधरोपण को जन आन्दोलन में परिवर्तित कर पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझाया और 65 से अधिक समाज, सामाजिक संस्थाओं एवं विभिन्न संगठनों को एक मंच पर लाकर सामूहिक समरसता एवं सहभागिता से माता भगवती देवी शर्मा स्मृति 'गायत्री उपवन' का भव्य निर्माण एवं पौधरोपण अभियान संचालित किया गया है। यह उपवन केवल पौधरोपण का केंद्र नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति संवर्धन, सामाजिक समरसता और भावी पीढ़ियों के लिए हरित एवं स्वस्थ भविष्य निर्माण का एक प्रेरणादायी संकल्प है। इस महत्वपूर्ण पहल से संबंधित जानकारी एवं गतिविधियों को दर्शाने वाला गायत्री उपवन परिचय बुकलेट डॉ. चिन्मय पण्ड्या को सादर भेंट की गई । साथ ही उन्हें पेटलावद पधारकर गायत्री उपवन का अवलोकन करने एवं परिजनों का मार्गदर्शन करने हेतु सादर आमंत्रित भी किया गया। गुरुदेव माताजी की ओर से आशीर्वाद प्रदान किया और विश्वास दिलाया कि जब भी इस ओर आएंगे पेटलावद अवश्य आएंगे। इस अवसर पर वरिष्ठ परिजन मोतीलाल गामड़, सत्यनारायण पालीवाल, जीवन भट्ट, निलेश पालीवाल, राजेन्द्र मोरिया एवं अनुराग गौड़ उपस्थित रहे।

चायनीज मांझे ने फिर काटा युवक का गला

माही की गूंज, धार।

पतंगबाजी का शौक अब लोगों की जान पर भारी पड़ने लगा है। प्रतिबंध के बावजूद जिले में चायनीज मांझे की बिक्री और उपयोग जारी है। इसका ताजा मामला गंधवानी क्षेत्र में सामने आया, जहां चायनीज मांझे की चपेट में आने से एक मैकेनिक के गले में गहरा घाव हो गया। हादसे में घायल युवक को उपचार के लिए बड़वानी ले जाना पड़ा, जहां डॉक्टरों ने उसके गले में चार टांके लगाए।

गंधवानी थाना क्षेत्र के बाग रोड पर मैकेनिक अमीर मुंडा अपनी गाड़ी चेक करने के लिए डेहरी रोड की ओर जा रहा था। इसी दौरान अचानक सड़क पर फैला चायनीज मांझा उसके गले में उलझ गया। अमीर कुछ समझ पाता, इससे पहले ही मांझे से उसकी गर्दन कट गई और खून बहने लगा। आसपास मौजूद लोगों ने तत्काल मदद करते हुए उसे गंधवानी अस्पताल पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर चोट के चलते उसे बड़वानी रेफर किया गया।

अमीर के रिश्तेदार सलमान खान ने बताया कि गले में गहरा घाव होने से काफी खून बह रहा था। बड़वानी में डॉक्टरों ने उपचार के दौरान चार टांके लगाए। घटना के बाद परिवार के लोग चायनीज मांझे के उपयोग पर कार्रवाई की मांग को लेकर थाने पहुंचे। पुलिस ने प्रतिबंधित मांझे का उपयोग कर पतंगबाजी करने वाले के खिलाफ बीएनएस की संबंधित धारा में प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस अब मांझे की बिक्री औ

सिर्फ कागजों में है प्रतिबंध

चायनीज मांझे का खतरा जिले के लिए नया नहीं है। दो साल पहले 14 जनवरी 2024 को धार शहर के लुनियापुरा निवासी छह वर्षीय कनिष्क चौहान की हटवाड़ा में चायनीज डोर से गर्दन कटने के कारण मौत हो गई थी। इस दर्दनाक घटना के बाद भी प्रतिबंधित मांझे की बिक्री और उपयोग पर प्रभावी अंकुश नहीं लग पाया है। हर साल प्रशासन प्रतिबंध के आदेश जारी करता है और कार्रवाई के दावे भी किए जाते हैं, लेकिन पतंगबाजी का मौसम आते ही यह जानलेवा डोर बाजार में पहुंच जाती है।

तीन टीमों की जांच के बाद भी डटे हैं खड़े हनुमान

माही की गूंज, उज्जैन।

सिंहस्थ-2028 के लिए शहर में सड़कों के चौड़ीकरण का काम तेजी से आगे बढ़ाने की तैयारी है, लेकिन कंठाल से गोपाल मंदिर मार्ग पर खड़े हनुमान की मूर्ति का विस्थापन प्रशासन के लिए चुनौती बना हुआ है। मूर्ति को बिना नुकसान सुरक्षित स्थानांतरित करने के लिए अब तक इंदौर, भोपाल और दिल्ली की तीन तकनीकी विशेषज्ञ टीमों से जांच कराई जा चुकी है।

इसके बावजूद विस्थापन तय नहीं हो पाया है। अब प्रशासन को विशेषज्ञों की रिपोर्ट और अंतिम तकनीकी फैसले का इंतजार है। मंदिर का मुख्य ढांचा चार सितंबर को हटाया जा चुका है, लेकिन करीब आठ फीट ऊंची मूर्ति अब भी अपने मूल स्थान पर है।

इसे हटाने की कोशिश सितंबर में की गई थी, लेकिन मूर्ति अपने आधार में मजबूती से स्थापित होने के कारण विस्थापन संभव नहीं हो सका। इसके बाद प्रशासन ने जल्दबाजी के बजाय तकनीकी विशेषज्ञों की मदद लेने का निर्णय लिया।

तीन शहरों की टीमों ने खंगाली संरचना

मूर्ति की जमीन के भीतर की स्थिति और आधार की गहराई समझने के लिए सबसे पहले इंदौर के विशेषज्ञों से परीक्षण कराया गया। इसके बाद 29 अक्टूबर की रात करीब 12 बजे भोपाल से आई टीम ने इलेक्ट्रानिक उपकरणों की मदद से मूर्ति और उसके बेस की स्कैनिंग की।

एसडीएम लक्ष्मीनारायण गर्ग की मौजूदगी में हुई इस जांच के निष्कर्ष सार्वजनिक नहीं किए गए। इसके बाद 22 नवंबर को दिल्ली से विशेषज्ञों की टीम पहुंची। टीम ने सुबह करीब 6 बजे मूर्ति के आसपास उपकरण लगाकर तकनीकी परीक्षण किया। इस दौरान पुलिस बल तैनात रहा।



2801.75 करोड़ के कार्यों को मंजूरी

भोपाल।

सिंहस्थ 2028 (क्लीन एंड ग्रीन) थीम पर आयोजित किया जाएगा। ऐसे में राज्य सरकार ने स्वच्छता पर सबसे ज्यादा निवेश का लक्ष्य रखा है। सिंहस्थ में प्रमुख स्नान के दिनों में प्रतिदिन लगभग 2500 टन कचरा उत्पन्न होने का अनुमान है। इसके निपटान के लिए 13 हजार सफाई कर्मियों की दैनिक तैनाती होगी। जीपीएस और एकीकृत कमांड एवं कंट्रोल सेंटर से निगरानी होगी। ठोस अपशिष्ट के संग्रहण, परिवहन, साफ-सफाई और वेक्टर नियंत्रण के लिए 153.73 करोड़ रुपये का प्रस्ताव है।

2801.75 करोड़ रुपये के 33 प्रस्तावित कार्यों को मिली मंजूरी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में सोमवार को मंत्रालय में सिंहस्थ-2028 की सभी व्यवस्थाओं की मंजूरी और निगरानी के लिए गठित मंत्रिमंडलीय समिति की सातवीं बैठक हुई। समिति ने पर्यवेक्षण समिति द्वारा अनुशंसित 2801.75 करोड़ रुपये की लागत के 33 प्रस्तावित कार्यों को मंजूरी दी। सिंहस्थ के दौरान शौचालय, मूत्रालय और स्नानघरों के निर्माण, संचालन एवं रखरखाव के लिए 393.53 करोड़ रुपये का प्रस्ताव है।

2584 हेक्टेयर मेला क्षेत्र में 8,169 स्वच्छता सेट में 1,74,858 इकाइयां होंगी। 1.19 लाख शौचालय, 23,200 स्नानघर और 31,600 मूत्रालय होंगे। सार्वजनिक शौचालय लगभग हर 500 मीटर पर होंगे। घाटों पर महिला श्रद्धालुओं के लिए हर 200 मीटर पर 185 चेंजिंग रूम सेट में से 85 सेट सीएसआर के माध्यम से बनाए जाएंगे।

क्षिप्रा के जल की गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रस्तावित कार्य

क्षिप्रा नदी के जल की गुणवत्ता सुधारने के लिए 12.33 करोड़ से इन-सीटू उपचार, बायोरेमेडिएशन और रियल-टाइम जल गुणवत्ता निगरानी प्रस्तावित है। देवास नगर निगम द्वारा नागधम्मन नदी पर इंटेकवेल बनाकर दूषित जल को मौजूदा एसटीपी से जोड़ने का 1.50 करोड़ रुपये की लागत से कार्य किया जाएगा, ताकि श्रद्धालुओं को स्नान के लिए शुद्ध जल मिल सके।

मुख्यमंत्री बोले - 2027 तक पूरे करें कार्य

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि विश्व के सबसे बड़े धार्मिक मेले सिंहस्थ-2028 के प्रबंधन के लिए जितने भी काम निर्माणाधीन हैं या मंजूर हो चुके हैं, वे सभी हर हाल में 2027 के अंत तक पूरे कर लिए जाएं।

हर माह सिंहस्थ की मंत्रिमंडलीय समिति की बैठक आयोजित कर निर्माणाधीन और प्रक्रियाधीन कामों की समीक्षा की जाएगी। मेला क्षेत्र, घाटों और प्रमुख मार्गों पर निर्बाध एवं वैकल्पिक बिजली वितरण व्यवस्था के लिए 387.99 करोड़ की कार्ययोजना है।

अंतरराज्यीय सीमाओं पर ड्रोन से होगी निगरानी

सिंहस्थ के दौरान 100 बम निरोधक दस्ते (बीडीडीएस) टीमों की आवश्यकता होगी। उज्जैन सहित प्रमुख धार्मिक स्थलों और अंतरराज्यीय सीमाओं की सुरक्षा के लिए ड्रोन आधारित निगरानी, एंटी-ड्रोन तकनीक भी अपनाई जाएगी। सिंहस्थ 2016 की तुलना में इस बार होमगार्ड की संख्या 8,000 से बढ़ाकर 11,500 की जा रही है। वहीं नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों की संख्या 4,000 से बढ़ाकर 10,000 की गई है। घाटों, अखाड़ों, पार्किंग स्थलों और परिवहन केंद्रों के बीच 45 करोड़ से 2000 बसों का संचालन होगा।

जिन नेताओं ने धीरेंद्र शास्त्री से कराई रामकथा, वे सब चुनाव हारे- दिग्विजय सिंह

गुना।

सत्य सनातन स्वाभिमान यात्रा लेकर उज्जैन से अयोध्या तक पदयात्रा कर रहे दिग्विजय सिंह ने कथावाचक धीरेंद्र शास्त्री पर बड़ा बयान दिया है। साथ ही उन्होंने यूपी के कुंडा से बाहुबली विधायक राजा भैया पर भी कटाक्ष किया है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि बागेश्वर महाराज राजा भैया के घर भी रामकथा कहने के लिए गए हुए हैं, लेकिन जिन-जिन नेताओं ने धीरेंद्र शास्त्री से रामकथा कराई वे सभी नेता चुनाव हारे हैं।



दिग्विजय सिंह जब बयान दे रहे थे, उस दौरान उनकी पत्नी अमृता सिंह ने उन्हें बीच में टोकने की कोशिश की। लेकिन दिग्विजय सिंह नहीं रुके। दिग्विजय सिंह ने कहा कि बीजेपी जितनी भी राम कथा कराए कांग्रेस के लिए उतना हितकारी होगा।

दिग्विजय सिंह ने गीतकार व पटकथा लेखक जावेद अख्तर की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने राम को लेकर जो बयान दिया, मैं उसका भरपूर समर्थन करता हूं। यही सनातन धर्म है, जिसके लिए हम यात्रा निकाल रहे हैं।

दिग्विजय सिंह के बयान से माहौल गर्म

बयान देने के बाद दिग्विजय सिंह ने कहा कि ये पत्रकारों के लिए हेडलाइन का काम करेगा। आपको बता दें कि उज्जैन से शुरू हुई दिग्विजय सिंह की पदयात्रा अब उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर चुकी है. उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव का माहौल है। ऐसे में दिग्विजय सिंह की बयानबाजी ने माहौल को गर्मा दिया है। चुनाव से ठीक पहले यूपी के कुंडा विधायक राजा भैया द्वारा पंडित धीरेंद्र शास्त्री से रामकथा का आयोजन कराया गया। राजा भैया दिग्विजय सिंह के रिश्तेदार हैं और जयवर्धन सिंह के मामा ससुर हैं। लेकिन दिग्विजय सिंह को बखूबी पता है कि राजनीति में कोई रिश्तेदार नहीं होता।

रामकथा के माध्यम से समाजवादी पार्टी को घेरने की कोशिश की जा रही है, जो कांग्रेस की गठबंधन पार्टी है। इसलिए दिग्विजय सिंह ने कुंडा विधायक राजा भैया के ऊपर कटाक्ष करते हुए सवाल खड़े कर दिए।

क्या शासक को मालिक व आम जनता को सेवक मानने लगे है वर्तमान राजनीति में नेता व जनप्रतिनिधि ...?



धरना स्थल पर धरनार्थियों का कलेक्टर, एसपी से संवाद।



एसडीएम की उपस्थिति में धरना प्रतिनिधि सदस्य व भाजपा जिलाध्यक्ष भानु भुरिया, भाजपा प्रवक्ता श्री भाभर से चर्चा। मध्यस्थता कर रहे व्यापारी संघ।

माही की गूंज। संजय भटेवरा

खवासा/झाबुआ। जहा भारतीय लोकतंत्र में शासक को सेवक और आम जनता को मालिक माना गया है। वही क्या वर्तमान के राजनैतिक व सत्ताधारी नैता व जनप्रतिनिधि लोकतंत्र की वास्तविकता को बदलने का प्रयास कर शासक को मालिक व आम जनता को सेवक मान रहै हैं...? यह सवाल बड़ा चिंतन करने वाला वर्तमान राजनैतिक परिस्थितियों को देखते हुए सामने आ रहा है। आज हम बात करें खवासा क्षेत्र व यहा कि ज्वलनशिल पेयजल समस्या व सिंचाई हेतु पानी कि, तो यह समस्या इस वर्ष अल्पवर्षा के चलते सामने आ रही है ऐसा नहीं है। जबकि इस समस्या से खवासा ही नहीं वरन क्षैत्र देश के आजादी के 8 दशक के बाद भी इस तंज को झेलने को मजबूर है।

अब सवाल यह उठता है कि, आखिर आजादी के 8 दशक के बाद भी खवासा क्षेत्र को यह तंज क्यों झेलना पड़ रहा है...? जिसमें पूरे सिस्टम कि अनदेखी, जननेताओ की लापरवाही व अनदेखी या फिर क्षेत्र की एक सिरे से उपेक्षा किया जाना ही जवाबों में सामने आता है। हम ऐसा नहीं कहते हैं कि, सरकारों ने प्रयास इस समाधान के लिए नहीं किए, प्रयास किए लेकिन वह प्रयास जमीनी स्तर पर पुर्णतः भ्रष्टाचार की भेट चढ़ सरकार की मंशा को शून्य साबित किया है। ऐसे में भ्रष्टाचार की इस कहानी की पुर्णतः जवाबदेही भी प्रशासन के साथ शासन की ही मानी जाएगी।

अब बात शासन की बड़ी व महत्वाकांशी योजनाओं की करे जिन योजनाओ से खवासा क्षेत्र को आस थी कि, क्षेत्र एवं जिले के नेता व मंत्री इन योजनाओं के प्रोजेक्ट में खवासा क्षेत्र को शामिल कर पेयजल व सिंचाई सम्बन्धित पानी की समस्या से निजात मिलेगी। लेकिन विधानसभा एवं लोकसभा में बैठे विधायक, सांसद व मंत्री प्रयासो में विफल रहे या यू कहे कि, परियोजना के बने डायग्राम के समय इनका कोई प्रयास ही नहीं रहा और खवासा क्षेत्र की हमेशा ही उपेक्षा की गई।

शासन की तीन महत्वाकांक्षी योजना और खवासा क्षेत्र की उपेक्षा

ऐसा एक परियोजना में नहीं बल्कि एक के बाद एक तीन बडी जल सम्बन्धित परियोजनाओं में अनदेखी व उपेक्षा की गई। जिसमें पहली लाब्रिया माही डेम सिंचाई परियोजना जिसमें पहले आश्वरसनो के साथ चुनावो के समय जननेताओं ने यह वादे किये कि, जनता मालिक है और हम सेवक बन क्षेत्र की लाब्रिया माही डेम सिचाई परियोजना का लाभ खवासा क्षेत्रवासियों को मिलेगा। यानिकी उक्त सिंचाई परियोजना के अंतर्गत आने वाली नहर पेटलावद क्षेत्र के साथ खवासा क्षेत्र में इस नहर का पानी सिंचाई हेतु मिलेगा। परियोजना बनी पेटलावद क्षेत्र में यह नहर आई यह अच्छी बात है। लेकिन अतः खवासा क्षेत्र को इस नहर का लाभ परियोजना से विलुप्त कर दिया या फिर प्रोजेक्ट में शामिल ही नहीं किया और सिर्फ मत हासिल करने के लिए चुनावों में वादे कर लोगों को गुमराह करने का ही कार्य किया गया। और अन्त में कह दिया गया कि, रेल्वे लाईन नहर में बाधा बन रही है... यानी रेल्वे लाईन क्रास कर नहर नहीं आ सकती कहकर लोगों को उपरोक्त टेक्निकल समस्या बताकर अपना पल्ला झाडा गया।

उक्त निराशा में बाद क्षेत्रवासियों को नर्मदा माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना से क्षेत्रवासियों को आस बंधाई गई और तत्कालीन विधायक कलसिंग भाभर जब शिवराज भाजपा सरकार के हिस्सा थे उस समय उक्त परियोजना का प्रोजेक्ट बना और 2018 में इस परियोजना की नींव रखी गई और 24 अक्टूबर 2026 को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उक्त योजना का शिलान्यास किया और थांदला विधान सभा के कुछ गांवों के साथ झाबुआ जिले के करीब 194 गांव को 15 नवम्बर से पानी मिलने का कहा। यह अलग बात है कि, कुछ टेक्निकल कारण से जिले के 194 गाँवों को भी 15 नवम्बर से पानी नहीं मिला।

उक्त नर्मदा सिंचाई परियोजना की पाइप लाइन खवासा के काकड तक आकर बन्द कर दी गई और क्षेत्रवासियों के सामने आया कि, सरकार की दुसरी एवं महत्वपूर्ण नर्मदा माइक्रो, उद्वहन सिंचाई परियोजना से भी खवासा काकड़ तक लाकर खवासा क्षेत्र को वंचित किया जा रहा है। जिसपर स्थानीय मीडिया ने भी मामले को उठाया और पिछले करीब डेढ़ वर्ष से आम जनता ने अपनी जागरूकता दिखाते हुए उक्त नर्मदा परियोजना का लाभ खवासा एवं क्षेत्रवासियों को मिले की मांग के साथ महिलाओं ने खाली बर्तन बजाकर विरोध किया, चक्काजाम किया। आदि विरोध के बाद भी पहले आश्वासन बाद में विभाग की टेक्निकल टीम ने परियोजना का लाभ खवासा व क्षेत्र को नहीं मिलने का स्पष्ट संदेश दे दिया था।

वहीं तीसरी एवं महत्वपूर्ण खवासा क्षेत्र के माही तट पर तलावड़ा माही पेयजल परियोजना का डैम निर्माण एवं रतलाम से मंदसौर व धार तक के करीब 13 सौ से अधिक गांवों को प्रोजेक्ट में फिल्टर पेयजल हेतु यूनिट एवं सप्लाई पाइप लाइन के साथ उक्त करीब 2500 करोड़ की परियोजना से भी खवासा क्षेत्र को कुएं के पास बिठाकर भी प्यासा रखते हुए उक्त माही पेयजल परियोजना से भी वंचित रखा गया। जिससे स्पष्ट है कि जन नेता व प्रशासनिक अमला व सरकार ने खवासा क्षेत्र की अपेक्षा ही की है। जिसके बाद लोगों का और गुस्सा बड़ा और विरोध के क्रम को बढ़ाते हुए राजनीति से ऊपर उठकर सर्वदलीय एवं आमजन सभी एकमत होकर बैठक रखी, कलेक्टर को ज्ञापन दिया, भाजपा प्रदेश प्रवक्ता कलसिंह भाभर ने प्रेसवार्ता रखी, दोनों योजनाओं का लाभ क्षेत्रवासियों को दिलवाने का वादा किया, सीएम से मिले लेकिन बात यही कि कहीं यह भी वादों का महज झुनझुना ना हो। इसलिए 16 नवंबर से आम जनता व सर्वदलीय नेता अब ''प्रयास नहीं परिणाम चाहिए'' की बात के साथ ''माही-नर्मदा मांगे खवासा क्षेत्र'' के बैनर तले एकमत के साथ अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे।



कलेक्टर प्रतिनिधि नायब तहसीलदार राजेश जमरा की वार्तालाप के बाद 23 नवंबर को धरना समाप्त। धरनार्थियों ने इस दौरान शासन-प्रशासन को सद्बुद्धि दे की प्रार्थना के साथ मां सरस्वती की प्रतिमा पर की माल्यार्पण।



माही-नर्मदा मांगे खवासा क्षेत्र की मांग व धरने को समर्थन के बाद थांदला एसडीएम को ज्ञापन देते हुए खवासा सकल व्यापारी संघ।

वही धरने के दौरान भी सत्ताधारी नेता उक्त धरने को असंतुष्टों का जमावड़ा व राजनीतिक चमकाने का कुटिल प्रयास बताने का प्रयास करते रहै। ऐसे में स्थानीय व्यापारी संघ ने भी क्षेत्र की वाजिब मांग के इस मुद्दे को संपूर्ण रूप से समर्थन दिया व मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन एसडीएम थांदला को खवासा ग्राम पंचायत पर दिया।

वहीं भाजपा प्रवक्ता कलसिंह भाभर व भाजपा जिलाध्यक्ष भानु भुरिया अपने नेताओं के साथ खवासा 20 नवंबर को पहुंचे और धरने की समस्त मांगों को पूरा करने के आश्वासन के साथ बंद कराने का प्रयास पंचायत भवन में ही दिनभर बैठकर करते रहे परंतु धरना स्थल पर नहीं पहुंचे।

वहीं दबाव पूर्ण यह प्रयास भी सामने आया कि, धरने पर बैठे एक-एक व्यक्ति को अलग-अलग फोन कर दबाने का प्रयास कर धरने से दूरी बनाने का प्रयास किया गया। 20 नवंबर देर शाम को व्यापारी संघ द्वारा एसडीम को ज्ञापन देने के बाद भाजपा जिलाध्यक्ष के अनुरोध के बाद स्थानीय मीडिया व व्यापारी संघ ने मध्यस्थता करने का प्रयास किया और धरना स्थल पर बैठे दो प्रतिनिधि सदस्य को चर्चा करने हेतु तेजाजी मंदिर ले जाया गया और भाजपा जिलाध्यक्ष एवं भाजपा प्रवक्ता भाभर से संक्षिप्त वार्तालाप की गई। लेकिन भाजपा प्रवक्ता ने अपनी इगो के चलते धरना स्थल पर जाने से मना किया पर दोनों योजनाओं का लाभ खवासा क्षेत्र को दिलाने की बात भाजपा सरकार की और से कहीं। तत्पश्चात सहमति यह बनी कि, जिलाध्यक्ष एवं सभी भाजपा नेता धरना स्थल पर जाकर धरना खत्म करने हेतु चर्चा करेंगे, जिसके पहले धरने का प्रतिनिधि मंडल एवं मध्यस्थ व्यक्ति बीजेपी नेता गोपाल चौहान के साथ जाकर धरनार्थियों से चर्चा कर सहमति हेतु बात करें तथा गोपाल चौहान के फोन कॉल के बाद भाजपा जिलाध्यक्ष के साथ नेता धरना स्थल पहुंचेंगे।

लेकिन यहां यू टर्न यह रहा कि, मध्यस्थकर्ता धरना स्थल पर जाकर बात ही कर रहे थे कि, भाजपा जिलाध्यक्ष भानु भुरिया एवं प्रवक्ता कलसिंह भाभर ने मध्यस्थता कर रहे अपने ही नेता के फोन कॉल का इंतजार भी नहीं किया और खवासा से रवानगी ले ली। उक्त नेताओं की रवानगी ने यही दर्शाया कि, शासक सेवक नहीं बल्कि मालिक बन गई है और आम जनता को सेवक मान लिया है। लेकिन इन सत्ताधारी नेताओं को मालूम नहीं कि, असली मालिक तो आम जनता ही है और यह मालिक अपना फैसला समय आने पर जरूर सुनाता है।

वहीं दूसरे दिन 21 नवंबर को कलेक्टर डॉक्टर योगेश तुकाराम भरसट एवं एसपी देवेंद्र पाटीदार धरना स्थल पर धरना खत्म करवाने हेतु अपने काफिले के साथ पहुंचे। परंतु एक दिन पूर्व सत्ताधारी नेताओं की करतूतों के चलते धरनार्थियों को यही लगा कि, कलेक्टर साहब भी सत्ताधारी नेताओं की मुंह जुबानी बोल रहे हैं और आश्वासनों के अलावा कुछ नहीं। और यहा कलेक्टर के आने के बाद भी धरना समाप्त नहीं हुआ।

तत्पश्चात धरनार्थियों ने धरने का क्रम बढ़ाते हुए निर्णय लेने का प्रयास किया कि, उक्त धरने के साथ क्रमिक भूख हड़ताल जिसके बाद झाबुआ तक पैदल मार्च, फिर भी मांग पूरी नहीं हुई तो चक्का जाम और उसके बाद अनशन पर बैठने का विचार विमर्श किया गया। तत्पश्चात 23 नवंबर को अपनी सरल कार्य शैली रखने वाले नायब तहसीलदार राजेश जमरा कलेक्टर प्रतिनिधि के रूप में अपने स्टाफ के साथ धरना स्थल पर पहुंचे और धरना स्थल पर बैठी महिलाओं एवं पुरुषजनो से सहजता के साथ वार्तालाप की ओर माही पेयजल परियोजना में खवासा क्षेत्र सहित थांदला विधानसभा के करीब 150 गांवों को योजना का लाभ मिले जिसका प्रपोजल कलेक्टर साहब द्वारा मध्य प्रदेश शासन भोपाल भेजा गया है। तथा शासन की प्राप्ति एवं प्रपोजल की प्रति 3-4 दिनों में क्षेत्रवासियों को देने की बात कलेक्टर की ओर से कही।

वहीं करीब 4 किलोमीटर दूर नर्मदा सिंचाई परियोजना का आउटलेट है उस आउटलेट को बढ़ाकर एक माह में खवासा बड़े तालाब में सीधे पाइपलाइन लाकर पानी लाया जाएगा। जिससे क्षेत्र के कुछ गांवो को अभी लाभ मिलेगा। तत्पश्चात नर्मदा सिंचाई परियोजना को भी प्रोजेक्ट में खवासा क्षेत्र को जोड़े जाने का आश्वासन दिया। तत्पश्चात 3 माह के लिए उक्त धरने को स्थगित किया गया।

अब देखना यह है कि, जो सत्ताधारी नेता ''जनता को सेवक और शासक को मालिक'' समझते हैं और जिन्होने पहले अनदेखी की गई और अब क्षेत्रवासियों को दोनों परियोजनाओं का लाभ दिलाने के वादे किए जा रहे हैं। और वादे पूरे नहीं होने पर चुनाव नहीं लड़ने की बात कही जा रही है। अब नेताजी चुनाव नहीं लड़ने की स्थिति में आएंगे या क्षेत्रवासियों को इन योजनाओं का लाभ कब तक मिलेगा यह देखने की जिज्ञासा हर किसी में है।

विधायक विक्रांत भूरिया ने भी नर्मदा लाओ पर किया पैदल मार्च

विरोध की दूसरी कड़ी में झाबुआ कांग्रेस विधायक विक्रांत भूरिया ने भी राणापुर से झाबुआ कलेक्ट्रोरेट तक करीब 20 किलोमीटर तक का पैदल मार्च विरोध के रूप में किया। विधायक के साथ कांग्रेसी नेताओं की यह मांग थी कि, राणापुर क्षेत्र को नर्मदा माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना से वंचित किया गया है। सरकार का दायित्व है कि, प्रत्येक व्यक्ति को मूलभूत सुविधा का लाभ दे इस और सरकार कार्य करें। राणापुर क्षेत्र को उक्त नर्मदा सिंचाई परियोजना का लाभ मिले इस हेतु प्रोजेक्ट में इजाफा कर उक्त सिंचाई योजना का लाभ दिया जाए। भाजपा सरकार की कथनी व करनी में अंतर बताकर झाबुआ कांग्रेस विधायक के नेतृत्व में करीब 20 किलोमीटर का पैदल मार्च राणापुर से झाबुआ कलेक्ट्रोरेट तक निकाला और ज्ञापन दिया।

वहीं उक्त कांग्रेसी प्रदर्शन के बाद भाजपा जिलाध्यक्ष भानु भूरिया ने विक्रांत भूरिया एवं परिवार पर आरोप लगाते हुए कहा कि, भाजपा विकास कर रही है लेकिन कांग्रेस के राज में विधायक के पिता कांतिलाल भूरिया विधायक एवं सांसद के साथ प्रदेश व केंद्र में मंत्री भी रहे जब राणापुर क्षेत्र के साथ जिले का विकास क्यों नहीं किया। विक्रांत भूरिया एवं परिवार द्वारा सिर्फ लोगों को गुमराह किया जाता है, कहा।



पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया व झाबुआ कांग्रेस विधायक ने राणापुर क्षेत्र में नर्मदा लाओ के संबंध में दिया ज्ञापन।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422